

अमरसिंह

(वीररत्न पूज्य ऐतिहासिक नाटक)

प्राजाय चतुर्मेन

प्रभात प्रकाशन
दिल्ली मद्रास

प्ररागङ्ग
प्रभात प्रसारण
दिल्ली

•

गिराङ्ग
आचार्य धनुष्यन

सर्वापिनार सुरगित

•

मधुम्यर '६०

•

कुङ्क
जवाहर त्रिभुज प्रेम
नौगला मधुरा

•

गृध्र
सन रपया

प्रमाण
प्रभात प्रमाण
निम्ना

गण
प्राधाय यशुमन

सर्वाधिकार सुरक्षित

•

नवम्बर ६०

•

मुद्र
जवाहर त्रिनिग प्रेस
मोल्गा मपुरा

दृश्य
एन एन

परिचय

प्रमर्गमिह गठोर का जीवन समाप्त २ पूरा जीवन का
का प्रथम कौटुंबिक जीवन उदाहरण है। यह सनातन
का पूरा यह उद्देश्य जानि वास्तव की जैना उद्देश्य का पर
वृद्धा बुद्धि की आज उमरा हम विचार भी नहीं कर सकते।
महापुरुष नाम न कहा है— स्वाम अनुभव की उच्चता है परंतु
प्राणों का त्याग सब स्थानों में श्रेष्ठ है। उमी प्राण का क्षणिक
धनापाम हा मुठ भूमि न त्याग है हमनिव क्षणिक मान
वीर्य जानि का सर्वोच्च धिार है।

प्रमर्गमिह की पत्नी मम्यद् १७ ० विद्वती की है। उस
समय गंगा की एक गद्दी नागौर में थी। प्रमर्गमिह के पिता
महागुरु प्रमर्गमिह जा ज्ञानपुर के महाप्रभापी और वीर राजा
थे। उद्देश्य अहीनार वादनाह के निय ५० मुठ विजय निय
के और वीर हुजारी जान तथा वीर राजा मनमय का घोड़ा
तथा मनमय की पत्नी गाता दरवार में प्राप्त की थी। वादनाह
न मनमय घोड़े पर मुठों लगता गाफ तर निचा था। यह अंग
बीर थे यह ही दानी भा थे। प्रति १३ वधिया का १५ साग
स्वयं मनमिय थे। ज्ञानपुर का गाता गदाना वधिया और
वीर्य का दान मनमय गान्धी जाना रत्ना था।

उन महाशय्य व तीन पुत्र हुए जिनमें महेन्द्र घनसागर जी वान्नायम्बा में ही मर गये । यद् यद्ही महाशय्य चमरगिह थे । छोटे प्रबल ब्राह्मी यन्त्रगिह थे जिनकी तसवार का साहाय्यम तर माना गया था ।

सन् १६८६ में महाशय्य गजगिह जी सागीर पादशाह जंगीर का गया में गये । यहाँ वे चमरगिह का भी मर गये थे और बाबुआ ग बर गुन बर उग्रहने उनके मिय जुग मनसय और माटे शर साग रुपया गासाना की जागीर उनर नाम बढ़वा दी थी तथा बापपुर राज्य का उत्तराधिकारी अपने छोटे पुत्र यमपन्नामिह को बना लिया था ।

चमरगिह चर्यन्त उग्रत स्वभाव के थे । वे बड़े हठी शाल के पनी और प्रबल प्रवृत्ति के पुरुष थे । उनके उग्रत स्वभाव के महाशय्य तारत एक बार महाशय्य गजगिह जी में त्याग्य-गुण वगैरे के विषय और उन्हें क्या क्या देन की आज्ञा दी थी । या पत्रना रिहमी सन् १६६६ की ^५ । इस पर चमरगिह ने आज्ञा पाकर घाट और बाबुआ साहसिकी के द्वारा मर गये सन् १६६६ । इस पत्रना के पीछे यह बाद महाशय्य गजगिह जी घाट पर घाट घी घषानत बरत बीमार हो गये । उनका मर्गी जान का समाचार मृत स्वयं बाबुआ उन्हें खबर दी घाट । तब महाशय्य में घण बरिष्ठ पुत्र यन्त्रगिह को घषाना उत्तराधिकारी स्वीकार करे वाद सन् और घन्त मर्गीने ग चमुरगेण किया । उन्हें महाशय्य का घी तम चमुरगेण स्वीकार कर लिया और बाबुआ

म मणवन्तसिंह का चार हज़ारी जाम व तीन हज़ारी सवारों का मनमय घोड़ा निमनघत दकर मारबाड़ का राज्य सौंप दिया । अमरसिंह का तीन हज़ारी जाम और तीन हज़ारी सवारों का मनमय दकर महाराज की उपाधि दी । माघ ही नागीर की खागीर का परबामा भी ले दिया । इसके बाद आगर ही म महा राज गजसिंह की मृत्यु हो गई ।

उस समय अमरसिंह की आयु २५ वर्ष और मणवन्तसिंह की १० वर्ष की थी । महाराज अमरसिंह को जब मोस वस्र पहिना कर और मोस रग व पाड़े पर सवार कराकर राज्याधिकार श्युत करके रण निजामा दिया गया था तब यहूत से बीर राठीर उनके साथ ही निजाम बन्ये । उनम इनका गामा अशु नगोड़ भी था । आगरे आगर उन्होंने आगसाह के मिय कई युद्ध विजय लिये । उन्होंने शीतल और सुन्देमगड के युद्धों में मरगों और सुन्देनों से भाग्य के युद्ध कर विजय प्राप्त की । फिर यशाह गजा के साथ युद्ध करने कासुत भी गये । अमरसिंह का वारता उनका उप स्वभाव और भयानक क्रोध सर्वत्र ही प्रसिद्ध हो गया । उनकी घोड़ों देगाए बड़े २ बीरों के समक साथ जाते थे । उनसे साथ युद्ध हुए और भी बहुत थे । इन्हीं बीरों में एन बीरकर बन्सू जी बताया व जा बने भागी मोडा व । बपायत गोशामनाग जी के घाट पुत्र हुए जा घाट बनकर महावीर प्रसिद्ध हुए, और घाटों बड़े-बड़े युद्धों में काम आए । एन घाटों योंरों का यगोन रण प्रहार लंगय म लिया गया है—

शुभर दरवागे उमराव की बारी २ से बादगाह की द्योड़ियाँ पर पहरा पना पड़ता था । यद्दे २ राजा घोर गरजाग की घपनी घापनी घासकर द्योड़ियाँ पर हाकिम रहना पड़ता था । घमरगिह की जब द्योड़िया पर पहरा देने की घागा हुई तो उम्होने क्रोध सुररु इन्नार कर दिया । इन सब यात्रा मे तथा समावन गाँ द्वारा नाम मरे जाने म वारगाह पाहबडी बहुत घप्रगन्न हा गया घोर घमरगिह पर मान गाग गाये वा नावान पर लिया ।

दूमर निम जब घमरगिह लबाग म हाकिम हुए तो यगी समावन गाँ मे उम्हें पाहा नावान दागिन करने को भरे दरवार म बटा । घाना मे बाग बड़ ग घोर उम्होने क्रोध में भरकर बटार समावन के गेट म मोर ही । समावन गाँ वही मर कर डेर हा गया । घमरगिह मे बागाह पर भी मार लिया पर बटार गम्भे में जा टबग घोर बागाह तथा द्वाद भाग गटा हुआ । घमरगिह मदा मिदन यर्ब पर चड गय घोर बडी स घामगाग क घेगन में घोडे गति कृद वर । घोटा को गे मर गया पर वे वैश्य जिमी तरह घान पर घा गठून । घटी मे उमर गाये घर्बगौड म उ, भोग म रिम में मार मार टामा । बागाह मे उनहा भाग की सुर पर दरवा लिया घोर भीषान की लगर करने तथा लबाना म र बन का हूम द लिया ।

गती मे घट मुना तो घोरनी म विरति वा सुराधिना लिया । उमर घान मरी म गमगाग वा रिम म बाबर मतागत्र की लगर मी वा भजा गया तथा जान वा लदाग की घोर लगी

सना ने नीमहत्या घेर लिया तथा युद्ध भी छान लिया ।

यह वृत्तान्त महाराज भमरसिंह के प्रधान भाऊ जी बम्पाबत ने बम्पूजी को लिया, जो वहीं भागरे रहते थे । उन्होंने प्रथम तो सहायता देने से मना कर दिया परन्तु पीछे खी के कहने से मरने-मारने पर मुक्त गये और सेना से किले पर आया वीर दिया तथा भमरसिंह को सांग को पराक्रम से उठा लाये और इस प्रकार भमरसिंह का ताने क रूप में कहा हुआ वाक्य सफ़्फा लिया । यह युद्ध बुधारा फाटक पर हुआ और बल्लू जी बेसतर सांग को ले गए । यह घटना विक्रम संवत् १७-१ की है । उमी दिन से यह फाटक गाही हुकम से बन्द कर दिया गया तथा जिन दुर्ग से धोड़ा कुदाया था उसे 'अरव दुर्ग' धर भी कहा जाता है । कहते हैं कि बुधारा फाटक को जब-जब किसी ने गोसना चाहा, एक वियपर सर्प ने उसकी जूल से निकल कर उसे डम लिया । फिरकास तक लोग भय से उन फाटक के निरट नहीं गये । घन्ट में सन् १८०८ में प्रथम जे कप्तान मिस्टर स्टॉल ने उन फाटक को सोसा और वह सर्प वहाँ से निकलकर सिमी तरफ को चला गया ।

सांगीर में भमरसिंह की स्तुति बना है । इसके पुत्र का नाम राधसिंह था जिसने औरङ्गजेब के राज्यपाल से अच्छी बीगना का परिचय लिया था । इन्हीं राधसिंह के पुत्र इन्द्रसिंह से जोधपुर के महाराज प्रवीरसिंह ने सांगीर लीन लिया था ।

उपर्युक्त परिहासिक वचन ही हमारे इस माटक की भित्ति

है। इस पटना को दंग का अरणा-बन्दा जानना है। मोटंकी के मेम बासों के दंगला गूब प्रचार किया है परन्तु हमें इस सिगने से बड़ा बट हुआ क्योंकि अमरगिह का दंग प्रचार उल्लेखित होने का जो कारण इन पुस्तकों में दिया है यह वास्तव में निराधार है।

हमने अट्ठबाज गी पठान की मैत्री और महापना का जो कारण दंग माटक में दिया है उगका पार्थम ऐतिहासिक मह है। यन्तु जी को साधारण गम गमासों की पुस्तक में बागी पुत्र का 'सायुगाह' का नाम से पुत्राग मया है। अमरगिह का माटक में 'हमन अमरगिह' का मन्त्रिका सिगा है। इतिहास में उगका नाम नहीं है। प्रचलित कथानां का आधार पर ही हमने लगा दिया है। तारा भी वास्तविक है और दारा का प्रेम भी।

घाता है दंग की अस्मत्पूर्व नाम से पाठकों का मनोरञ्जन और सिगा राजा का की प्राप्ति जाती।

—बुधमेव

अंक एक

पहिना दृश्य

[स्वान पहाड़ी बंजन दूर तक गंगे पकठ घोर कठिहार
माड मोड़े पर मखार धमरमिह घोर उमक मरणा
का प्रवेश ।]

धमरमिह— (पसीना पोंछने हुए) उफ, कितनी गरमी है। बही
छाया नहीं। मूरज घाग उमन रहा है। मपती
भूषों के भाके घरीर को भुनमाय डासते हैं। बंड
मूस गया। फियन एक विमान पानी दो।

[विगत बुघही में से पानी उड़ेजना है]

मिपागी—(बागे बइकर) धो महाराज ! बहू जी की सुराही
का पानी खत्म हो गया है बहूगनी जल मांगती हैं।

धमरमिह—मन्नशता गुगही म कबम यही छापा विमान
उन है।

धमरमिह— (पाठकर) क्या धानपान बही जम का ठिकाना
नहीं ?

मिपागी— धनशता, म-म नीय में जम मने दोगना।

धमरमिह— यह विमान घट्टागी को दे।

[फियन आना है]

धमरमिह— (एक मी १२ पत्तार दूर तक धारों तरफ देगना है।

है। इस पटना को हम का स्रष्टा-रचना जानता है। मीठकी के गम यामों में हमारा गुरु प्रचार किया है परन्तु हमें इस सिगने में यदा कदा हुआ क्याकि समरमिह का हम प्रचार उद्योजित होने का जो कारण इन पुस्तक में दिया है यह यामक में निराधार है।

हमने यहबाद का पठान की मैत्रा और महायना का जा वर्णन इस नाटक में किया है उसका वर्णन ऐतिहासिक कह है। बन्धु जी को साधारण गम गमाओं की पुस्तक में दागी पुत्र का 'मोक्षगाह' का नाम में पुत्राग गया है। सममिह को माय में हमने समरमिह का मनीषा सिगा है। इतिहास में उमरा नाम मरी है। प्रचलित स्थानकों का आधार पर ही हमने सिगा किया है। ताग भी बाल्यनिक है और दारा का प्रेम भी।

घागा है यह पीरगगूर्ण मायक में पात्रों का मनोरजन और सिगा शनों की का प्राणि शमी।

—बुधन

अच्छ एक

पहिला दृश्य

[स्वान पहाड़ी बंदन दूर तक से एक ही वज्रित
माह बोले पर मभार प्रदर्शित प्रौर एक मरणा
का प्रेम।]

अमरमिह— (पानी पीते हुए) ठह, कितनी गरमा है। कहीं
झापा नहीं। सूरज घाग उगल रहा है। अपनी
सूत्रों के भोंके गरीर की मुससाये बासन है। एक
सूत्र गया। किन्तु एक गिमाम पानी न।

[किन्तु मुण्डी में से पानी उड़िया है]

मह मिपारी—(घागे बहकर) यो महागज ! वह जी की सुगहा
का पाना मभ्य हा गया है बहूयनी जम मांगती हैं।

किन्तुमिह—यन्ताना मुण्डी में कबल यही घापा मिमाम
जम है।

अमरमिह— (पराजक) क्या घानगाम कहीं जम का छिपाना
नहीं ?

मिपारी— यन्ताना जम-जम काम में जम नहीं गलना।

अमरमिह— एक गिमाम यन्ताना का ?

[फिर जम है]

अमरमिह— (पराजक) यन्ताना जम र कहीं जम केना है।

अब मैं न हूँ—हाथ बरस। पानी! हाथ प्राण
 बनायी। एक बुद्ध पानी बाल सपावर) सुनो, यह
 तिमारी घायात्र है। (मच गुनने है—हाथ। एक
 त्रिकता। अम्माह के भाव पर बोर्डे मारि का नाम एक
 बुद्ध पानी है। एक बुद्ध पानी।)

अमरमिह—(बुहार कर) बिगन जरा गहर जा गिमाग गहर
 मरे गाय घा। (पादे को उपर बाला है।)

[एक भाव के मगरे महाराज सा बेनेम पदा है]

अमरमिह—(बने के बम बेटवर स्थान) घरे बघा मर गया ?
 (गती पर हाथ पर कर) मही जीगा है। तिमन
 दगा मुह में पामा दाम। (तिमन पानी दामा है)

शाबाशर्मा—(हाथ पावर) या गुदा पानी मिय घया। बनेजा
 टटा हो गया। जात घनी ते पग्दिनागममन नेर
 मन्ना मे बरा माम मार घायात्र गच्छिता घदा बर ?

अमरमिह—गती कुपु भा अम्माह मरी है। गता तुम कुपु
 ग्यात्र बमत्रार हो ? गता हा जाघा। (हाथ के
 गदारे मे उगता है)

शाबाशर्मा—(गता हावर) त मरे मन्नागल नाम। तुम पाह
 जो बोर्डे हा तुमन मरी जान घगा है। जनी
 गुम्माग पमीना गिरेगा गनी मरा गुन मरगा।
 (मन्ना चीर घबर्गात्र को भाव मे देगतर) हुकर
 बाई गत्रकुमार मातृम हाव है।

अमरमिह— (मुस्कराकर) मैं अमरमिह राठौर हूँ। पर तुमने मुझे अपनी दोस्ती कहकर पुकारा था न ?

राहबाजगी— (मनोरंज में) महाराज के रखे बा मुझे क्या न था। गुस्ताफी माफ़ करमाये। (बदमाँ में बैठकर) मैं बदमा सिपाही महाराज की दोस्ती का दम भरन की ताव नहीं रखना। मगर मैं नाउम्र हुजूर का जखरीय गुनाम रूँगा।

अमरमिह— दोस्त जो बात सबाई से मुँह स निवस गई है, उसे बापस मत भो। आज से तुम अमरमिह राठौर के दोस्ती समझे गए (अपनी पगड़ी उतारकर उसके गिर पर रखता है और उसकी आंखों के गिर पर रखता है) मोद रखना अब हम पगड़ी-बदमा आई हुए। आपो गव मिस में। (गले मिलकर) हाँ, तुम्हारा नाम क्या है ?

राहबाजगी— (आँसों में आँसू भरकर) एक बदमा सिपाही की जान आपने बर्गी और यह इज्जत दी है। मुदा उसकी बदमा दन का दिन साए। मेरा नाम राहबाजगी है और मैं पठान हूँ।

अमरमिह— बहुत ठीक तुम आगरे ही बस रहू हो न ? अच्छा एक घाटे पर बड़ जापो। मुझे आज ही आगर पहुँचना जरूरी है। थोफ़ मूरज हूज रहा है। (पीने पीरे प्रस्थान)

[पद्योत्तर]

अंशमे मे मे शब्द—हाय भरा । पानी । हाय प्राण
बचाओ । एक बूँद पानी काज मपाकर) मुनो यह
रिमारी घावाज है । (यह मुनन है—हाय । दम
निरता । घम्पाह के भाव पर बोर्डे बार्द का भाव एक
बूँद पानी से । एक बूँद पानी ।)

अमरमिह—(पुतार कर) रिगन जग झूठ जा गिमाग नरन
भरे गाय था । (पीठे को उतर बड़ाता है ।)

[एक भार के गगने घट्याज को पलाय पदा है]

अमरमिह—(बदन के बदन बैठकर, स्थान) घरे क्या मर गया ?
(लट्ठी पर हाथ पर कर) कर्ती जीता है । रिगन
गगने मुँह म पाना टाम । (रिगन गानी टामता है)

गन्धार्थ—(होम घावर) मा गगन पानी मिन मया । कनका
टग हा गया । जान वगी ते पग्दिनागमन नर
पदा से क्या नाम मरन घावाता गबिता घन कर ?

अमरमिह—गगी कृत्त भा उररन मरी है । क्या तुम कृत्त
गगन कमशार हा ? एक हा बचाओ । (हाथ के
गहने से उररता है)

गन्धार्थ—(गगन हावर) ते मेरे मररपाम गगन । तुम पा।
तो बार्द हा तुमन मरी जान वपा है । कर्ती
मररग पमीना रिगन वगी मरग गूँद मरगा ।
(हावर घोर घबर्दिता को उररन से उररता) उरर
बार्द गन्धार्थ मन्नुम हात है ।

अमरसिंह— (मुस्कुराकर) मैं अमरसिंह राठीर हूँ। पर तुमन मुझे
अमी दोस्त कहकर पुबारा था न ?

राष्ट्राजर्ज्वरों— (गक्रोच से) महाराज के स्वतंत्रे का मुझे ख्याल न
था। गुस्ताखी माफ़ करमाएँ। (बदलों में बँटकर) म
अदना सिपाही महाराज की दोस्ती का वम मरने
की ताव नहीं रमना। मगर मैं ताउम्र हुजूर का
जरखरीद गुसाम रहूँगा।

अमरसिंह— दोस्त, जो बात सबाई से मुह सं निबम गई है
उसे वापस मत लो। आज से तुम अमरसिंह राठीर
के दोस्त समझे गए (अपनी पगड़ी उतारकर उसके निर
पर रखता है और अपनी अपने निर पर रखता है) याद
रमना, अब हम पगड़ी-बदल भाई हुए। आओ गले
मिल लें। (पने मिलकर) हाँ, तुम्हारा नाम क्या है ?

राष्ट्राजर्ज्वरों— (आँगों में आँसू बरकर) एक अदने सिपाही की
आन आपने बगनी और यह इज्जत की है। गुदा
उसका वरमा देने का निन साएँ। मेरा नाम
गहपाजर्ज्वरों है और मैं पठाम हूँ।

अमरसिंह— बहुत ठीक तुम आगे ही अम रहें हा न ? अरुछा
एक घोडे पर चढ़ जाओ। मुझे आज ही आगे
पहुँचना जरूरी है। घोफ़, मूरज हूब रहा है। (पीरे
कीरे प्रस्थान)

[पद्यालेन]

दूसरा दृश्य

[स्नान—घामने म घमराम का मरुत ममय मप्याताम
घमराम् घामने ब। न म मरुत ममरवर की पटिया पर
ब। गिमी मभीर बिबार मे निम-न है। घामने पप्यात
मय रहा है। मुत दूर पर शाने मो-ना रही है। उतरी
उग ॥ स्वर-जही धीर मगुर पाव-रनि म कभी-कभी
घमराम का प्यान दृष्टा है।]

अमरमिह—(संज्ञा) य शिवा भी जग की क मा मनीगी मन्तु
है। कपन मयन धीर भृगाव—बग यही इनका
मगर है। धेमी रणा म्या बट रहा है। गिमी मुर्द
ममना की पपार ना कमी है। परन्तु मन जग दृष्टा
रणा है। एतरी। म परग के धाम म म्या जाता है।
मा य मपार ती पा र। है।

[मपारती का प्रण]

अमरमिह—घामा त्रिय रणा कनी मुन्त मप्या है। दृष्य दृग
मुने का मुन्तगी रिम्या म मरुत मुन्त मप्या का
मप्य रिम्या क मा मप्यामान हा रणा है। पर रणा
मप्या का म मो क मुन्तगी मुन्त पर घमराम
मन की मुन्त का कमी मपार है। इग मपारी की
मप्या का मा रणा। घम मय रणा उमम कों
मा रिम। कया कना मप्या का रही है ?

रानी— स्वामिन् इनम से कोई भी दृश्य इ दी के भान-जीर्ण दुर्ग के साधारण कौशुरों की उमके प्राप्तपान की धूम्य वनस्थली के योग्य मनोरम नहीं । जिनका इतिहास मरे माप-दादों के बीरतापूर्ण उत्सव स परिपूर्ण है जहाँ की बीबा-बीबा धरती पर मरे धारमीयों के गर्म रक्त के अमर-पिन्ड हैं वह दुर्ग वह धरती मर माप-दादों की धपनी है यह भागरा मुगल बादगाह की उमके बंगधरा की वस्तु है इसकी गोमा के पागरी तो बही हा सभत हैं ।

अमरसिंह—प्रिये इतनी धरतिगद तो न बनो । दया वह कख्या केसा मोती-सा अस बगेर रहा है कैसा सुन्दर है ?

रानी— इस अमागे अम्बारे का अल जितना ही उन्नत होन का प्रयास करता है उतना ही इसका पतन होता है । यह अणुटी म कम डालकर ऊँच होकर ऊपर उठता है और परपर पर गिरकर बिखर जाता है । स्वामिन् इस अग्धन-अस्त अमागे अस की इस दुदना को ही माप मीन्दय कहते हैं । इसकी बिषाता पर मापको तमिज भी दया नहीं पाती ।

अमरसिंह—सब है प्रिये अग्यन का मौन्द्य ही क्या ?

[चिन्ता करने लगने है]

रानी— महाराज, दासी की धृष्टता अमा के माप्य महीं, परन्तु मर और बाहर की गोमा ता उनके स्वार्थीन बिषरण

दूसरा दृश्य

[स्थान—घाघरे में अमरमिह का महल। समय संध्याकाल। अमरमिह अपने बर्बाब में एक मगमरमर की पटिया पर बैठा किंगी दम्भीर बिचार में निमग्न है। सामने पम्पारा पथ रखा है। कुछ दूर पर डोरमें मॉट का छही है। उनकी उग ह स्वर्-महरी घोर मपुर पाठ-वनि ता कभी-कभी अमरमिह का ध्यान टूटता है।]

अमरमिह—(स्वागत) य स्त्रियां भी गगल की कसी अनोखी वस्तु हैं। केवल गायन और शृंगार—घस यही इनका सवार है। कैसी टग्न हवा बह रही है। तिसी हुई अमली की पहार भा कैमी है। परन्तु मन जैसे झुका जाता है छानीजम पवन क दोम म दको जाती है। सा यह महार नी घा रही है।

[महापत्नी का प्रवेश]

अमरमिह—माघो प्रिय देगो कर्गी मुन्ग संघ्या है। इबसे हूण मूय की मुनहगी विगगा म यह मुगल गध्राट का भय्य तिसा कसा सामायमान हा रहा है। यह दगा बादशाह के महलो क मुनहरी सुजो पर धम्लगन मूय की पूर की कैमी यटा है। इम अमली की मुदय को ना दगा। घर तुम इनमा उगम क्यों ना प्रिय ! कत्रा ए वी याद घा रही है ?

रानी— स्वामिन् इनमें से कोई भी दृश्य सू दी के मग्न-जीण दुग के साधारण कँगूरों की उतक भ्रामपान की धून्य बनस्यसी के योग्य मनोरम नहीं । जिनका इतिहास भरे बाप-दादों के कीर्तापूण उरसग स परिपूण है, जहाँ की चौवा चौवा घरती पर मर घातमीयों के गर्म रक्त के अमर-पिन्ह हैं वह दुग वह घरती मरे बाप-दादों की अमनी है यह भागरा मुगल बादशाह की उतके बगुयों की वस्तु है इसकी घोमा के पारप्री तो नहीं हो सकत हैं ।

अमरसिंह—प्रिये इसनी घरसिक् तो न बनो । देगो यह पम्बारा कैसा मोती-सा अम बखेर रहा है कसा सुन्दर है ?

रानी— इन अभागे पम्बारे का अम जितना ही उन्नत होन का प्रयास करता है, उतना ही इसका पतन होता है । यह अकुटी में बस बासकर कूठ होकर ऊपर उटता है और पम्बर पर गिरकर बियर जाता है । स्वामिन् इस अग्न-उन्नत अभाग अल की इस दुदगा को ही आप मोन्द्य कहत हैं । इसकी विवशता पर आपकी तनिक् भी दया नहीं आती ।

अमरसिंह—तब है प्रिये अग्न का मोन्द्य ही क्या ?

[चिन्ता करने लगत है]

रानी— महाअज, दासी की धृष्टता अमा के योग्य नहीं, पम्बु मर और माहर की घोमा तो उनके स्वाधीन विषरण

में ही है।

अमरसिंह—महागनी ! परन्तु

रानी— परन्तु कुछ नहीं प्राणेश्वर जीवन धीर प्रतिष्ठा दोनों ही से स्वतन्त्रता प्यारी चीज है । कहो स्वामिन् क्या यह मरत्य नहीं है ?

अमरसिंह—सत्य है प्यारी मैं इस स्वर्ण-शूद्रता को विधीर्ग करूँगा ।

[लड़ा हो जाता है]

रानी— (लड़ी होकर) धीर तभी महाराज इस नामी के यथार्थ पति हाने ।

अमरसिंह—महागनी तुम्हारी जैसी बीरांगना मुझ प्रथम राम के भाग्य में विधाता में सिग ली है । (कुछ ठहर कर) परन्तु प्यारी कुछ चिन्ता नहीं मैं तुम्हारा यथार्थ पति बनने की श्रष्टा करूँगा ।

रानी— प्रथम महाराज प्रथम यही तो भरे पतिदेव का वास्तविक रूप है । उठीर नर-नाहर के समान धाज कौन सोहे का धनी है । महाराज दासी की नगों में भी हाड़ा-बंध का गर्व रख है ।

अमरसिंह—मैं राठौर हूँ धीर मेरा रख भी टंडा नहीं हुआ है ।

रानी— असौ प्यारे हम नहीं गेम वो-जोल कर बार मुट्टी धन्न उपजा सगे ।

अमरमिह—गौरी ह्यामी राजपुत्री तुम्हारा स्वामी बनना नग्य नहीं है। मैं पिता के राज्य में न जान की प्रतिभा पर प्राया है और तो धाम धारणाह की सोचरो भा छोड़ दन का सुकल्प पर लिया। अब अगर यह तलवार सनामस है और अमरमिह के दम में हम है तो मैं नव राज्य की स्थापना करूँगा (तलवार नीचे करके पानी के सम्मुख बैठा है)।

रानी— (तलवार का निशान लगाकर) प्यारे राजपुत्री के हुन्य का पाना भी इसी तलवार की धार के पानी के समान सीमा होता है। भर हीर स्वामी आप बनी भी इस लगी की धपना सागामिनी जान के अयोग्य न पायेंगे। मैं हाडा-बंग की कुमारा है मंगराज।

अमरमिह—प्रौर में भा सठोर है मंगरानी।

रानी— तब प्राया प्यारे हम धपन अनुभव है अपना जीवन यहाँ। यह दया साग धार है। कमा प्यारे की भाना तहरी है। मैंने मंग धारमा का लव संता।

अमरमिह—(पानी में धुँव मगार) प्रिय रानी तुम्हारा उगरी जाना के नाम प्रिय गौर की उगग और प्रेम की प्रतिभा की और नाम का लव धार ही स्वयं गियारी। यह मेरे दुःखों की गतिना सुख-दुख का राग-दुःख का भीतर था। यह तारा ठर उगी की

प्रतिविम्ब है।

रानी— प्यारे, मैं उस पूजनीया के धरण चिह्नों पर बस कर अपना जीवन धन्य करूँगी। वह सती धन्य है जिसके स्वामी भाज भी उन्हें इस भाँदर से स्मरण करते हैं।

[ताप का प्रवेप]

तारा— पिता जी चाहिये भाप भी माता जा ! चाहिये। बेगिये मरी हरिणी मे कसा प्रच्छा बच्चा लिया है। पिताजी मैं इसके लिए एक भसग छोटा-सा महसूस बनवाना चाहती हूँ।

अमरसिंह—बटी हरिण तो स्वच्छर बस मे विधरण किया करते हैं। वे क्या महलों में रहते हैं ?

तारा— परन्तु मैं उसे महलों में ही रखूँगी। क्यों माता जी भागकी क्या सम्मति है ?

रानी— अक्षय्य तू अपने पिता की उपयुक्त पुत्री भी तो है।

(मुग्धपनी है)

अमरसिंह—(दृग्दर्) क्यों प्रिय अक्षय्य भा यह व्यंगबाण-वर्षण क्या ?

रानी— अक्षय्य छोटा भाव बनाये रखन के लिये जिससे अक्षय्य का स्मरण बना रहे।

अमरसिंह—तुम बड़ा निष्ठुर हो मदागमा !

गनी— हममें आश्चर्य क्या ? मैं हाड़ा-बग की राजकुमारी हूँ महागज !

अमरमिह—अच्छा हाड़ी-महारानी अब बसकर ठाग के मृग गावक को भी देख में ।

गनी— आप ही इस अत्यन्त आश्चर्यक काय का घर में मैं मृत्यु में जाकर महागज के काम का प्रवर्ण करूँ ।
[रानी का आवाज]

गारा— माता जी को मरी प्रसिद्धि भाती ही नहीं । बहनी हूँ शोष दो—व्ययन मुक्त कर दो ।

अमरमिह—बड़ी बह गजपूत की बनी है । स्वतन्त्रता उनके प्राणों में रम रही है । य वचन में बड़ किमी प्राणा को भी नहीं दण्ड मवनी ।

गारा— पर यदि मैं उस प्यार करूँ तब भी आपन में बांध मवनी है या नहीं ?

अमरमिह—नहीं बेटी प्यार का बांधन तो स्वयं ही इतना बड़ मुन है कि किमी अल्प बांधन को आश्चर्यका ही नहीं मवता ।

गारा— तब घाट भी मेरे हृदय-जावर को नहीं दगोंगे ?

अमरमिह—अच्छा दगूँगा बेटी अछा तुम जस यरी मे घाटी । देगूँ, हृदय-जावर बीमा है ?

गारा— (अनन्त में) मैं घनी ग घानी हूँ ।

(गाय का आवाज)

अमरसिंह—(स्वगत) ये दो मारी-हृदय हैं जिनकी सगमग
समान अवस्था है परन्तु एक अवोष धामिजा-संसार
के सब तापो से उमुक्त दूसरी तेज और बर्ष की मूर्ति
राजपूती रक्त की जीवित प्रतिमा । मेरे स्वाधीन होन
का निश्चय किया है पर ताराके विवाह का क्या
होगा ? यह बिना माता भी पुत्री (घाँसों में घाँसू
करकर) उस पवित्रात्मा की एकमात्र धरोहर ! अर्थात्
देखूँ स्वाधीनता का मूल्य क्या देना पड़ता है ।

[सेवक का प्रवेश]

सेवक— महाराज बग़ी सगायतलों धीमानों के दर्शनाथ
दृष्टियों पर उपस्थित हैं ।

अमरसिंह—(अहंकार) उन्हें धानरपूबक से घाघो । (सेवक का
प्रस्थान) यह सगायतनों का भीज है समझ में नहीं
आता । यह इनकी मित्रता बडाता है परन्तु इस
मित्रता में धानर और उरगाह नहीं पैदा होगा । यह
इनका नम्र इनका शत्रु इनका विनाशप्रिय है नि
क्या कहूँ । परन्तु उरगा माय मेरा निरा मित्रता ही
नहीं । क्या यह मेरा उरगापना नरा है ?

[गगाहन गग का प्रवेश]

गगाहनगग—धानर राजा साहब सुधारक । महारानी की गुण
धानर सुधारक ।

:—(उरगा और गगाहन को छोड़ कर साहब) मेरा प्यारे

अमरमिह

दोस्त आपसे प्रेम और ठुमकागना का मैं बली तक
घन्यवाद हूँ। धाड़व वडिय।
[दोनों बैठे हैं]

गन्धावन— यह तागीफ घाड़ ?

अमरमिह—मुझे घाड़ घाण घाज छ दिन हो गए परन्तु
दरबार में अभी वह हाजिर न हो गया। मरीतबि
यत ठीक नहीं थी।

गन्धावन— यह महागज के दुस्मनों को क्या हुआ ? यों क्यों
नहीं बहुत कि अभी माहिबा ने हुसम नहीं दिया।

अमरमिह—(दंभर) नहीं दोस्त यह बात नहीं।

गन्धावन— (हंभर) गैर जाने गीजिय। मैं गए जखरी मममे
पर घाणरो इगला इन घाया था।

अमरमिह—परमाइय।

गन्धावन— याग्याह गन्धावन घाणसे इस बात का जवाब हमसे
रिया घाहते हैं कि आपने याबानेर के महागज
अमरमिह पर फौज क्यों भेजी है ?

अमरमिह—इस बात में याग्याह गन्धावन को कोई गुरोर
नहीं।

गन्धावन— याग्याह गन्धावन यह समझते हैं कि यह
राजा घाणिया है ना ये यह समझ नहीं सकते
ये घाणम म रा । याग्याह गन्धावन म
गिगाएर दगा टु मुना ३।

अमरसिंह—क्या-क्या सुना है ?

सलाबत— एक यह कि आपन कण्ठसिंह के घाट-सी घादमी
कटवा डाले हैं ।

अमरसिंह—घीर ?

सलाबत— घीर यह कि आपने घीर भी पीजें भेजी हैं ।

अमरसिंह—घीर भी कुछ सुना है ?

सलाबत— जी हाँ यह भयड़ा बहुत ही मामूली बात पर बा ।

अमरसिंह—यानी ?

सलाबत— यानी एक मतीरे की बेस पर जिसे बोनो राजा
अपनी-अपनी बससाते हैं ।

अमरसिंह—बिस्तूम मष है । यह बेस नागीर की हृद में उगी
थी ।

सलाबत— घीर फल बीजानेर की हृद में आया बा ।

अमरसिंह—जिसकी जमीन में बेस उगी थी वही उखरा स्वामी
है ।

सलाबत हाँ—फल जिसकी जमीन में है, उखरने उस लेने का
अधिकार है ।

अमरसिंह—(बाब के) उगना फसला यह तसवार करेगा ।

सलाबत— नहीं महाराज ! जहाँपनाह न मरहद पर अमीन
भजन का हुनम दे लिया है । आप आपन गिगाही
बाजिग बुना सें ।

अमरसिंह—यह बदाबि नहीं हो सकता ।

समाधान— महाराज यह शाही हुकम है।

अमरमिह—य मेरे निजू माममे हैं इसमें शाही दखल की बिस्तुम जरूरत नहीं।

समाधान— मैंने घमीन भेज दिया है घाव फौजें बापिस बुसा मीजिये।

अमरमिह—घाव अपने घमीन को बापिस बुसा मीजिये।

समाधान—(बोव के) यह भी नहीं हो सकता। यह शाही हुकम है।

अमरमिह—(बाव के) यह भी नहीं हो सकता यह मेरी धारमा फा हुकम है।

[ताप का हरिण का बच्चा निते सबाधक प्रवेश]

ताप— यही बह प्यारा बच्चा है पिनाजी ..(समाधान को देख कर भिन्न जाती है।)

अमरमिह—साधा देगूँ ! ये तुम्हारे पपा बग्गी समाधान गाँ है बेटी। इनमे सजाने की क्या जरूरत है। भाई माहिब यही तारा मेरी घाँवों की पुममी है। देखिय हमके हरिण के बच्चे को घाव भी लेगिये।

समाधान— (ताप के बह बिरगिल का मे चमकता तार) घावो देगूँ बगा प्यारा बच्चा है।

[घुमा नेचों मे ताप को देगना है। ताप बच्चे को मे कर लपकी हुई लगी पाली है।]

समाधान— महाराज सड़ी घमी बपो गई ?

अमरमिह—घाव मे सजावत। य, निगी बच्ची है घभी इतनी

समझ क्यों ?

मलासत— क्या महाराज ने उसकी गादी का कुछ इन्तज़ाम किया है ?

अमरसिंह—जी हाँ उसकी सगाई उदयपुर के घुमार राजसिंह से हो गई है ।

मलासत— राजसिंह से ? गुस्ताखी माफ हो महाराज यह रिश्ता सो ठीक नहीं हुआ ।

अमरसिंह—(नाचकी के स्वर में) ठीक क्यों नहीं हुआ ? यह आप कैसे जान सके । आप तो काई मेरे गये गही ।

मलासत— महाराज नाराज न हों । मैं तो महाराज का खैर क्याहूँ । हमेशा वही राय दूँगा जिसमें आपको फायदा हो । उदयपुर का राणा उन्न-वाही का दुश्मन है । वहाँ रिश्ता करने से चाहेंवाहे धामम या नाराज होना मुमकिन है जिससे आपको दरबारे वाही में जो ख़तरा हाथिल है उसमें भ्रष्ट पड़ जायगा ।

अमरसिंह—(आप में) क्या बादशाह सनामज हमारी राजकियों की गादी भी अपनी ही मन्त्री से परेंगे ? हम लोगों को हमारी स्थितग्रता नहीं ?

मलासत— नहीं महाराज मेरा मतलब कुछ और ही है ।

अमरसिंह—यह भी पर्मा कीजिये ।

मलासतगर्भ—अगर आप अपनी गद्दी की गादी बिग्री वाही गानाज क चाहेंवाहे या बिग्री घामा एतव क रईग

के साथ कर दें तो आपको सहज ही में पाँचहजारी मनघष मिस बनता है ।

अमरमिह—(गुस्से व सात होकर) क्या कहा ? मैं अपनी सड़की की गाड़ी मुसममान साहजादे या किसी उमरा मे कर दूँ ?

मलाबत— महाराज साहजादे मुसममान फहाँ रहे जबकि उन की साहिदा साथ ही जैसे राजपूतों की बेटी थीं । राजपूत मुसममानों को घटियाँ दे ही गये हैं । आप कोई नया काम सो करेंगे नहीं ।

अमरमिह—(तपकर नीबकर) मैं तुम्हें दोस्त कह चुका हूँ । तुम यो नीब घोर समीने हा । जामो घायों क गामन ग दूर हो ॥

मलाबत—(उत्कर बोप ग) क्या आपको मालूम है आप यह घन्घरज किस से कह रहे हैं ?

अमरमिह—एक दोगन घायी मे जो दोस्त मे रूप म दुदमन है जो भेंट घौर विषाम का अनुचित साम चयाना है त्रिमे घात करने की समीज नहीं ।

मलाबत— महाराज अमरमिह तुम्हारी इस घन्घरानी का मजा तुम्हें गन् मियेगा ।

अमरमिह—घनाग जागा है कि दो दुःखे कर दूँ । (गन्घर चयाना है ।)

[गन्घर का मन्थन होकर प्रकाश]

अमरमिह—आह यह दण्ड है जो पराए गुलाम का मिश्रता है। यह पवित्र मेरे ही घर में मेरे साथ ऐसा अपमान जमक व्यवहार कर गया। मेरी प्यारी धेटी का विरस्वार कर गया। इस कमीन भावमी का विस्वास कर के धत-पुर में बुलाना ही भूल था। अथ सब से प्रथम तारा के विवाह का प्रश्न सोचना है। इसमें एक दास्य का भी विमम्ब होने से न जान क्या हो ?
[सोचने हुए प्रस्थान]

तीसरा दृश्य

[स्थान—विज का बाँस खाम। मीना बाजार धमा हुआ है। एतमे एक बड़ कर मुन्दरिया रंग-बिरंगी घोषाके पहिने कुर्तों गजाल बेटी है। मुण्ड की मुण्ड बैसमें चाह आदिये धीर तागारी बादिया धूम रही है। सब ठगरी करली जानी है बाबगाठ मनामन तल्ल पर मबार धाने है। तल्ल को तागारी बादिया उगाने हुए है। धगगाग कई गिया हासों के मोने के धाने धीर मोरदत तिय है। बटुन न खाने गद्य नाप बन रई है। धाने बादिया धाने गानी बन रही है।]

बादशाह— (गुम होकर) पाह क्या गमा घँपा है ! (धगदिया गाने बादिया पर मुगकर) हम उग तत्र धानी का दुबान पर

जाना चाहते हैं ।

[बादशाह की सवारी उबर को झुमती है]

नकीब— (चिन्ता कर) जन्मे इनाही खरामद बर्द मुजरा घन्व से ।

[मय हर जाल है]

शुबाली स्त्री—(नम्रुखी बेटों से) बेटों साबधान हो जाओ ।
बादशाह मुसामत इधर ही तपरीफ ला रहे हैं । जरा
कपड़े मम्मास को घोर इस तरह बँटो कि हजरत
मुसामत की नजर तुम पर पड़ जाय । घमर मुदा के
फजस से बादशाह की नजर तुम पर पड़ गई तो
तुम्हारे वानिद जस्म दो हजारी मनमब पाबेंगे ।

नकीब— (पुकार कर) होगियार घदब कामदा निगहदार ।

बादशाह—(तन्म रोषकर) ते माजनी ! तुम यहाँ क्या बेच रही हो ?

स्त्री— (गद्दी होकर, बानिद करके) पनाह घासम मेर पास
कृप बक्रिया इत्र है जो बन्नीब म मँगाये मये है ।

बादशाह— (हँस कर) धीर उनरी बीमउ क्या है ?

स्त्री— सरकार, पहले नमूना तो मुनाहिजा फरमाइए ।
(नकीब से) बेटों जहाँपनाह को इत्र दो ।

[बानिदा मरजा से गिरुठ कर घन्व म इत्र बेनी है]

बादशाह— (हँसकर) यूसू गूब हमन तुम्हारा मसाम इत्र खरीद
निया । पर मो बीमन । (पने के बोनियों की माना बगार
कर बानिदा के ऊपर फेंक देता है । फिर बुद्ध हसरत बुद्धा

अमरमिह—घाह यह दण्ड है जो पराए धुसाम को मिसता है । यह पतित मेरे ही घर में मेरे साथ ऐसा अपमान जनक व्यवहार कर गया । मेरी प्यारी बेटी का निरस्कार कर गया । इस कमीने धादमी का विद्वान बर के अन्त-पुर में बुझाना ही भूल था । अब सब से प्रथम तारा के विवाह का प्रदत्त सोचना है । इसमें एक क्षण का भी विमर्ष होमे से न जाने क्या हो ?
[मोबने हुए प्रस्थान]

तीसरा दृश्य

[राम—बिने का बीछ गाम । सीता बाजार गया हुआ है । एकम एक बढ़ कर मुन्दरिया रंग दिग्गी पागाई पहिने दुबाने मज्जाण बटी है । मुण्ड की मुण्ड बैसमें घाह पाबिये और तागारी बाणिया पुस रली है । मर टगे वी करती जानी है बादनाह मनामन तम्न पर मजार घाने है । तम्न को तागारी बाणिया उगने हुए है । मजताम बई बिया हाबी में गोने के घाने और मोरछण निवे है । बटन म म्पात्रमय नाव बन रर है । माव बाणिया घाने मानी बन रली है ।]

बादशाह— (गुप्त हाजर) घाह क्या ममा बीघा है ! (बाणिया जाने बाणिया पर मुण्डर) हम उग दत्र घामी का दुबान पर

जाना चाहते हैं ।

[बादशाह की मबारौ उबर को घूमती है]

नकीब— (बिम्का कर) जम्मे इसाही बरामद बर्द मुबरा घदब से ।

[सब हट जाने हैं]

इशबाली स्त्री—(नबयुवकी बेटी स) बेटी सावधान हो जाओ । बादशाह मसामत इधर ही तगरीफ सा रहे हैं । जरा कपड़े सम्भाल लो घौर इस तरह बैठो कि हजरत मसामत की नजर तुम पर पड़ जाय । अमर मुदा बे फजम से बादशाह की नजर तुम पर पड़े गईं तो तुम्हारे वामिद जरूर दो हजारी मनमब पावेंगे ।

नकीब— (पुरार कर) हाजियार, घदब बायदा निगहशार ।

बादशाह—(वण रोकर) ए आबमी ! तुम यही क्या बच रूठी हो ?

स्त्री— (गड़ी होकर, बोनिघ करक) पनाह घामम मरे पाम कुछ बड़िया इत है जो बन्नीज स मंगाय गय है ।

बादशाह— (हैम कर) घौर उनवी बोमन क्या है ?

स्त्री— एरबार, पहले ममूना लो मुसाहिजा फरमाइए ।
(नदवी से) बटी जहोपनाह का इत दा ।

[वामिद मग्ना न निकुड़ कर घदब से लट देती है]

बादशाह — (हैगकर) बटून मुब हमने तुम्हारा मसाम इत रगीद मिया । यत लो कीमन । (ग्ने से बोनिघों की माला उगाए कर वामिद के उगा पें देते हैं । फिर मुब हैमकर मुबः

मे) और भी कुछ तुम्हारे पास बचन को है ?

स्त्री— (समाप्त करके) हजरत सनामत मे कनीज पर घट्टत रहमत फरमाई ।

बादशाह—हम तुम से बहुत गुनाह हैं । (गोत्रे को संकेत करके उल्ल यकाले हैं ।)

रजगत रजाशामरा—(धीरे मे पाय आकर) सुदाबद उस जौहरी की दुकान का भी मुसाहिजा कर लिया जाय ।

बादशाह—(बनमिपीं मे शेरकर) बेहतर ! बह तो कोई राजपूतनी मजर घाली है ।

रजाशामरा—हजरत यह अमरगिह की धनी तारा हैं ।

[बादशाह उपर उग्न मे जाले का इराय करता है ।]

एक लानारी बांदी—(सायने आकर) दाहदाह आसम यह फूल घानी एग गुमबस्ता हजरत को मजर लिया चाहती है ।

बादशाह—(धीरे मे) यह कीन है ?

बांदी— (धीरे मे) येगम गलीयुहीन लीं ।

बादशाह—आह ! (उग्न को उतर बनाने का संकेत करता है । पट्टे कर) घाह गालून गुम्दाग गीस बना है ।

यगम— यह जौहरीनाह की वसन्त गम मीसू है ।

[एक मजदूर बनार गताम करती है ।]

बादशाह—(गुजरा मकर) याह कमी भानी गुजरा और गुजमूरत
गठन है। इसना क्या कीमा बना हागा वानू।

पगम— हजूर कीमत तो इसनी बहुत है।

बादशाह—वर कियहास तुम यह धरूठी ता भीर इसी पर सब
कग। (हारे की म बुठा रना है)

पगम— (हजूर) बाह, क्या जगसी बीज इयात की।

बादशाह—(हजूर) पलिनवर तो देखो मुमकिन है कि यह भी
यही हा।

पगम— (मकर) बाहशाह स धमदधी वरने की जुरमत महा
कर सबदी गगर

[बादशाह का लज्जा घामे पड़ना है]

ठाग— जहाँनाह को आयाधमजं पखी है।

बादशाह—(गुजरा मकर) बाह तुम हा ठाग क्या बेख रही हा ?

ठाग— हजूर कुछ रही अवाहिरात है। ये जहापनाह क
काम क गरीं।

बादशाह—हेगू तो—अवाहिरात फना रही हास ले नहीं। मुक
जनरी मगज जमना है। तुम्हार अवाहिरास जगर
येन पीम ॥ हागे।

ठाग— सब हजूरत सगामत वगमें (तां है)

बादशाह—(दिया हा दे) ५ ग्य हमने गगर लिय।

(ग्यावातय म) दम ता, भागियां ग गहामी
दीद्री यरना का गित ग।

[धमे वग है]

चोया हृदय

[स्थान—सावर का बरबार नाम बादशाह पाहजहाँ लम्हे-शाहम पर बैठा है समय प्रातःकाल ८ बजे उनके इन्-विर्ष जुल हुए बरबारी मरवार गये हैं भाजे-बर्बोर और नबीब धरब स यवास्थान गये हैं बादशाह के ऊपर मुनहरी खरोबी का खरोबा टंगा है मामन नमाबत या बग्गी नीचा निर दिये लगे हैं ।]

बादशाह—समाबत गाँ क्या यह सच है कि धमरगिह का इगदा बगाबत करन का है ।

समाबत गाँ—जहाँपनाह हज़ूर की हकूम में कुछ भज नहीं कर सकता मगर उमन बस ख्यौदियों पर मोफरी बजाने स शाफ इन्वार कर दिया है । और जहाँपनाह न बीषानर की मरहूँ ब भगड़े को मिगने के निय जा धमीन मुफरिग दिया था उसे भी बह मानने स इन्वार करता है ।

बादशाह—उगनी लमीं जुग्घन ! पाही ह्वम और नीरगे मे इन्वार ! हमका बादग क्या है ?

समाबत—पनाह घामम मम्की के दिवा और क्या बाम लो

सकता है ।

बादशाह— तुम्हारा क्या ख्याल है आपर ताँ ?

आफ़रग्वी— हुज़ूर यह भगवती ही नहीं ममवटरामी भी है ।

बादशाह— हम इसकी तम्बीह किया चाहत हैं । तुम खुद एक बार जाही हुकम की तामीस करान की कोशिश करो । उससे कहा— अब वह घपन बाप की गियासत स निशामा हुमा घावाराराने की सूरत में घागरे घाया था, तब जाही इनायत न उस भफराज किया था । उसे मनमव मरातिव जागीर धोर नी-महम का घालीगाम महम इनायत किया गया था । उसे हमने शाहो फौज का एक जिम्मदार सिपहसासार यनाया था । उन सब का यह बन्ना । जाघो में सिफ उसकी बहादुरी का कायम है । उससे बहो कि ख्योक्वियो पर हम्ब मामूम नौकरी बजा माण ।

मस्ताफत खाँ— जा दर्दाँद । मगर जहाँपनाहूँ धगर रामसिंह का हुकम किया जाय तो बहादुर होगा । इन खान्मि मे मुमकिन है वह सिद्ध जाय । रामसिंह ख्योक्वियों पर हाकिम है । हुसम हा तो हाकिम किया जाय । पर उसे मममा गरुगा ।

बादशाह— बदनर रामसिंह को बुलाया ।

[नबीर का रामसिंह को बुलान के लिये प्रस्थान]

बादशाह— (दुःख में) धगर सन्तनन के मरदार इग बन्द सुखबाँ

करेंगे तो तब मुंसियों का आत्मा समझिये ।

[रामसिंह का प्रवेश]

रामसिंह—(कोनिय करके) जहाँपनाह का क्या हुकम है ?

बादशाह—(बुझे थे) तुम्हारे अपा अमरसिंह की बात जो तुम सुनते हैं—क्या यह सच है ?

रामसिंह—जहाँपनाह से क्या सुना है ?

बादशाह—यह नि बहु सरपत्नी पर धामादा है ।

रामसिंह—जहाँपनाह यह बात बिम्बुस झूठ है । आपने महसा और कृपाओं को पाकाजा भून नहीं सपत । प हुकर पाहेंगे के आपने सिये प्राण दग ।

बादशाह—मगर यह डवीकियों पर मीररी वजान हाजिर व नहीं हुआ ?

रामसिंह—जहाँपनाह यह झूमरी बात है । वास्तव में पाका अप बाही मीरर नहीं रहना पादत । स्यापीन उनके स्वभाव को प्रिय है ।

बादशाह—क्या यह सरपत्नी नहीं ?

रामसिंह—नहीं जहाँपनाह ।

बादशाह—गाली हुकम पादुकी नहीं ?

रामसिंह—नहीं व पहन नि जहाँपनाह की गिम्मत में प्रद । चुके है नि अप जाली मीररगी नहीं करेंगे ।

बादशाह—(बुझे व बात होकर) यह मामुमति है । हम तु

हुकम देते हैं कि उसे ब्योड़ियों पर नीकरी दन हाजिर करा ।

राममिह— यह धमम्भव है जहाँपनाह ।

बादशाह— (गरजती बजाव से) उस हाजिर करा । उस घाना हागा ।

राममिह— (ताव स्वर में) य नहीं घायग जहाँपनाह ।

बादशाह— जब सब यह ब्योड़ियों पर हाजिर म हा एक साथ गपय राज क हिमाब म जुर्माना द ।

राममिह— जुर्माना वसूल करन बीन जायगा जहाँपनाह ।

मायाबा— धगर जहाँपनाह हुकम दें ता मुनाम यह गाही मिद गन बजा सायगा ।

राममिह— गी माहेब मामूल हाता है घापना मिर फायगू है । काकाजी का ऋठु न करमा ही प्रच्छा है । बरमा घागरे की टिँ हिम आयेंगे । हुकम हो तो सबक जाय ।

बादशाह— टहगा हम तुम्ही का हुकम दत है कि बज दरबार घाम म धमर्गमिह का मय जुर्माना हाजिर बगे । ममन्क ?

राममिह— (होड बजावर) ममन्क गया जहाँपनाह ।

बादशाह— ममन्क बरने गाही नाम तुम्हें मियगा ।

राममिह— (दमवर) नाम की घफात तो मयत का बरिअय प्याग है । जब हुकम का हुकम है ता काकाजी को में दरबार में हाजिर करूँगा । जहाँपनाह घापना पाबना बगुन कर सबत है ।

बादशाह— याद रखो अगर शाही हुकम की तामास न हुई तो नौमहल को यान में बिना दिया जायगा। मुगल बादशाह का एक घाँग निहाम कर सकती है तो कुमरी घाँव फौगाद की राग बना सकती है। समझ गये ? जाओ।

रामसिंह— समझ गया जहाँपनाह।

[प्रस्थान]

बादशाह— यह साँप का सौपोसा है। सभी ने इसमें यह ठानी है सत्तावतली।

मन्नाबत— पनाहें घासम।

बादशाह— एक मजबूत दम्ता नौमहले को घेरने का रवाना कर दो।

मन्नाबत— ओ दगादि यन्दा नबाज।

[चरवा बिरता है]

पाँचवीं हृदय

(स्थान—नौमहला। राजमहल का भीतरी भाग घाँव की उगगन बाँधी रात बाँधी पर माकनी बिछी है। जग पर मकमर के महारे अमरसिंह बैठे हैं। बाँध घोर लरी राती है। अमन-अमन लजिये लगे हैं। शाबिवाला बाँधी की बाँधी पर लता है। दो लताओं परा मज रती है। दो दान-बाँधे मारदण लिये लरी है। पापुर्न लज रती है घोर लजिये का रती है।)

राग छम्मास

अविचन रही जी गुहाग हा माही जी यागे ।

हाहा बन्न निमाय हग मफम बर मव बोय ।

गत्र सराजनि व परे हूंमी ममी की हाय ॥

हो लानी जी ॥

नुसहिन बन्न दुगान हो बयों गकुचन मुकुमार ।

सव दगन घातुर भई चातुर पट निग्वार ॥

हा माही जी ॥

[बन्धुग्योति बन्धुग्योति का प्रयोग मुख्य करत कृष्ण शब्द

माहीनी के बिलाने बंद कार्ण है । गायिकाया को गाय

बली है । 'हाही हाही रो । गायिकाया गाता है ।]

भरमा ए मुपड बन्धुग्योति हाहीनी गो ।

दीवण बाग सागा ग ॥१॥

पन्द्रग्योति—(बर म बर हाहीनी हई उबर) घननाता दारु
घारोति ।

[पन्धु व पान म गच्छ रही है]

अमरगिह—(हैमाग) बन्धुग्योति दग दूधनी घवम बाहीना में
यह मान मन्निग बनी मुगवनी प्रतात हाता है ।

[गच्छ वीबर पाना घारोति म भरकर मीग रहे है]

पन्द्रग्योति—(पन्धु वा हार नाहकर उगाव माती बरग्योति पर बार
बार बार गवर्धोति को मुयनी हई) घननाताही की
जय हा । (पन्धु) मतागत्र यह मन्दिग ही दस म

रात्रि का असम रस है । पीजिये महाराज ।

[भूमण प्यासा देती है]

[बानेबातियाँ धीरे धीरे म माती है]

दार पीवो रग बढ़ा राता रामो नैन ।

धैरी धारा अस मरे मुस पाबसा सैन ॥दारु०२॥

रानी— (जोम मे घाकर) बाहू क्या बात है ! यह सो । (बन्धन
उतार कर राबजी पर बार कर बादिबापों पर फेंकती है)

रामत्रयोति—(एक प्यासा घासे बड़ाकर) घारोगिए दरवार (अमरमिह
हँसने-हँसने प्यासा पी जाते हैं । गायिकायें बानी है)

सोरठ को दोहा भनो कपड़ा भनो सपेन ।

मारी हो निवली भनी घोड़ो भनो कुमेत ॥दारु०३॥

रानी— (मुस्कराकर) महाराज अब अधिक मात्रा म बढ़ाए

अमरमिह—(कप में) क्या चिन्ता है प्रिये आज सुगन्ध मिल
की रात है ।

[बानेबातियाँ रानी का मनेठ पाकर]

घाम फने परवार सां मरू फन पन गीय ।

निगरों रम माजम पिये ताज बठाभी होय ॥दारु०४॥

रानी— (असम्य होकर) बाहू-बाहू । साग रुपये की बात कही है
(घाला हाथ का कप उतार कर दे दालती है)

[गवाल का प्रवेश]

गवाल— (हाथ जोड़ कर) अन्नदाता की जय हो । महाराज
कृष्ण राममिह क्यौड़ी पर हाजिर है । मुजर क

घर्नाम घर्ज करते हैं ।

अमरसिंह—(ग समय रामसिंह क्यों घाया ? (बुद्ध ने तो भोंक में) घाने दो यहीं घान ले ।

[लक्ष्मण का प्रस्थान]

रानी— (मकेन मे गभगाभिवीं को जाने का मकेन करने)महागज घग्गमय में रामसिंह का घान का बुद्ध गूढ उर प्य हा मरना है घाय मावधान हुआये ।

[माते बाभिवीं का प्रस्थान]

अमरसिंह—(मय की भोंक म) मैं मदा ही मावधान हूँ । अत्र ज्योति मा एक प्यासा घीर दे । (अन्तर्यामि प्यासा देनी है घीर रानी का मकेन मनम् अभी जाती है)

[रामसिंह का प्रवेश]

रामसिंह— जुहार पारात्री जुहार पारात्री ।

अमरसिंह—गुत्र इस समय घाने का क्या कारण है ? बुद्धाय तो है ? (ने की भोंक में) अर्द्धा पतर एक प्यासा

रामसिंह— (घान काटकर) मापारात्री मावधान हुआये में बाह्याण फा गन्धेगा माया है ।

अमरसिंह—(का में) क्या बाह्याण गमापन यहाँ घा रह हैं ?

रामसिंह— मरी महागज उगाने घादरा गुग्गुल द्योत्रियों पर मोठरी दबाने का हवन दिया है ।

अमरसिंह—(गुग्गुल म माप पतर) क्या क्या ? द्योत्रियों पर मोठरी दबाने का ?

राममिह— हाँ महाराज धीरे यदि इसमें शीम हुई तो जुमाना मात लाग्न ख्यवा—एक साग्र गोज के हिसाब से ।

अमरमिह—(नमवार की झुठ पर हाथ पर के) धीरे यह जुमाना बमूल बोन करेगा ?

राममिह— बाबाजी यदि आप अभी द्योदियों पर जाकर नीकरी नहीं बजायेंगे तो कस आपको मेरे साथ दरवार घाम में हाबिर होकर जुमाना चुकाना होगा ।

अमरमिह—यदा तेरे साथ मैं जुमाना घदा करन बमू गा ?

राममिह— जाना पडेगा काकाजो में वात्साह को बचन बे घाया है । तैयार रहिय हम सोग बह जुमाना चुकार्येमे जिसकी यात् पीदियों तक खड़ेगी ।

अमरमिह—(बोव ग पुत्तारला हुष्मा) धरे बापर तू बेबस बचन ही द घाया है । दात्री का पुत्र होकर भी तूने यह घणमान मठ लिया ? तू राठीरबदा का बुसाङ्गार हुष्मा । मेरा घपमान गुनकर तू जीबित मोमहूमे बसा घाया ॥

राममिह— काकाजो तमी घात नहीं है

अमरमिह—धर, तिम समय जुमानि पा गण्ड कारों ने मुना वा मुझे उगी समय उम सुग्ग की जीम काट सेती थी । उगरी गन्त मट्ट—भी बया न उड़ा दो ?

राममिह— (घीनों में घीनु बरार) बापाजी मुझे घापनी मुचना दना घापघव वा । घापघे दम सेबक की

प्राणों का लक्षण भी माह नहीं । परन्तु मैं जूझ मरना तो लोग यही कहते कि बामबपन बिन्या ।

अमरसिंह—अच्छी बात है, कस मैं भरपूर जुमाना घदा करूँगा ।
(कठार अमर म चीबकर) इसी की मौक पर रखकर ।
पुत्र बिन्या नहीं कल मरे साथ निर्भय दरबार
बला ।

रानी— स्वामी यह मात्र पुरी है । सब बातों की गावधानी
की भावश्यकता है । अपने साथ बाँटा बहुत कम है ।
मान विचार कर काम कीजिये ।

अमरसिंह—प्रिय माँ-बिचार बापर किया करत है । अभी-
अभी तुम हाड़ापदा की बीरता का ध्यान कर रही
थी अब गमी सम्मति देनी हो । मैं अमरसिंह ही
क्या जा मोह पीर माह का धार न बहा दूँ ?

रामसिंह— काशमी साथ बबल घाजा दीजिए मैं अपनेसा ही
बाहर गब माना गुना घाना है । म मिहा का
जाया है ।

अमरसिंह—न । पुत्र अब घटना पावना अमरसिंह स्वय ही
पुराणमा । जो हाना हाया वह हागा । नृ घयनी
कामी के पाग रहकर भीमहने की रगा मग्ना । मैं
रज्ज्वार म घा रग मगाऊँगा जो बनी सिरी म न
रगा-शुना १ ।

रानी— महाराज दासी की बिनय ध्यान से सुनिये । मुझ में भी विवेक दरकार है । स्वामिन् भूल तो तमी हुई जब दाही मौकरी स्वीकार की । अब मेरी सुनिय महाराज मेरा हार खीजिय और दाही जुर्माना चुका कर यहाँ की गुमामी का प्रस्त कीजिए ।

अमरमिह—गुम्हारा हार लेकर जुर्माना भत्ता कर दूँ । बाह महाराजी अमरमिह के जीवन को धन्य होने की घबड़ी युक्ति बनाई । खे ये धन से ही इज्जत बेचकर प्राण बचाऊँ । धरी मूर्खा ! नौ करोड़ का राजाना सर्व्व भरी इस ललवार की धार पर धरा रहता है । यह मेरे बदन की इज्जत का प्रदान है । रातों रातों सदैव तग ही मे लम-लम करते हैं । पृष्ठी पर रातों की अप्रतिष्ठा करने वाला जीवन नहीं रह सकता । जीवन एक पानी का बबूना है । रहा-रहा न रहा न रहा ।

रानी— (घाँगा में घामू भरकर) स्वामिन् दागी का अपराध क्षमा हो । मरा कहना यही है कि ब्याह बँर और प्रीति ममान ही से करना चाहिये । मैं ऐसी अघम नहीं कि घाय असे पति की प्रतिष्ठा में बट्टा मगाऊँ । पर स्वामी तेरा बहू-मूल्य प्राणों की अमावधानी से नष्ट करना नो सुदिमानो नहीं ।

अमरमिह—गमक गया महाराजी, हाँदाघों की धीरता गमक गया । पर रातों-रात की यह रीति नहीं । तुम निर्भय

अमरमिह

रहा रानी, मैं अपनी अप्रतिष्ठा का बदला लेबर यदि
 जीवित रहा तो इसी जन्म में गुनामी से मुक्त रहूँगा—
 नहीं तो बीरों की भाँति परीर त्याग खावरी का
 बर्नब मिटाऊँगा ।

[नखी म प्रस्थान]

छटा दृश्य

[स्थान—घागे का गाँव बघाल राय का महल ।
 समय—संध्या-काल राय मूमाहिरो मल्लि बंट है । पगब
 का दौर बन रहा है । नगरियों मुख्य कर रही हैं । बरि
 और पावर बंटे है । बा शायिया संगत बन रही है ।]
 [गाविरा गाँव है]

राग—छायावट

य घोरियाँ प्यारे दुपम बरें ।

यह मन्टा साज सपेरी भुन भुन भूम भूमि नरे ।

नगपण प्यार होऊन ग्यारे हा हा तामा बाति बरें ॥

॥ य० ॥

गग्द पन्ना गग्द गर नाम यमम बन नीर !

निय बिन मच हो नै रह ताप-नपन मे टीर ॥

॥ ये० ॥

गधे बँटी घट्ट पर भौकत खोल किवार ।
मनो मदन गढ़ से खली ठ भारी तरवार ॥

॥ये०॥१॥

दारा— (दारा का एक प्यासा पीकर) बाहू बहुत घब्रछा गाया ।
(एक मुसाहिब से) हिन्दी के गग बानों को कितना
मुझाते हैं ।

मुसाहिब— (हाथ जोड़कर) यजा इर्दाद । हिन्दी जुषाम के क्या
कहने हैं ।

हमरा मुसाहिब—मगर हुजूर पर घब्रछी मामूम देतो है तो
किसी माजनीन के मुह म ही ।

दारा— (हमकर) नहीं यह बात नहीं । ब बबिगज बँठे हैं ।
(कदम) कबिराजजी घाल जरा गी माहब को
एकपय तेमा कवित्त मुनाइए नि के कायैल हो जाए ।

कवि— (बोलिए करके) मुमिये शाहजादा—

रजना दरमे बर म जा बहा बर मजा रखा तब सों मजमी ।
मजनीर पुमार बरा तन को तनको मरी पर घर्भ बरनी ॥
बरनी भर घ ब घरा पिय पो पिय का घयगमून होव धनी ।
बधना नरी जाग मय घजमा घबला बह पो पग धू रजनी ॥२॥

एक राजा माहब—बाहू कबिराज गूब बहा ! दरवाँ का क्या
निर्घर्यक पियोग है । कैसा कारीगरी की दर
याजना है । एकपय कविण बीरग्य का तो मुनाइये ।

ममगमिह

कवि—

(हाथ जोड़कर) जो घाजा महाराज मुनि—
 वमा नृप भीम पै बरामी नृप भीम वमू
 नक्रमुगी तोपन व वरु सरगत हा
 माप तोर घोरन का मोर न मुनाद दीर
 घोरन पी पोरन व घोर वरगत हा ।
 मोर हम गीरन के नीर तरगते वर
 वीरन व पुच्छन व वाज वरगते हों ।
 हर हरगत वर पूज वरगत वर
 वीरन वरगत भीम गम वर रात हा ॥१॥

× × × × ×
 वारा— याह कवि गूय बहा । वरगा वर नीति का भी ता
 कविना मुनादण । वरगते वरगते क्या है—
 कवि— मुनिये वाहजाण—

उर वो गम्भीर हाथ मीन मरा मुग वा ।
 याह वो वगार पुनि वाप का वरिग हाज
 वामन वो मोचो दयीणम मूज गत वा ।
 मन वा उजार वीमा हाथ वा वरमा टन
 वाह ही वा वाता है सहीगा मुग दुग वी ।
 वरिग रिनामः न तेमा जा भेवागे तव
 वान व दु वारु गिगार है वरग वा ॥१॥
 [वर वाह-वाह वर व]

दारा— (बुझ होकर) बाह-बाह क्या भूव ! (शरणा का प्यारा पीठा है)

कवि— (फिर मुञ्चल करके)

छन्दः

यात यात में तरक करे निज मुग प्रसुताई ।
 जन जन तें मिषता सुगत बाध ममुताई ॥
 सद्य कामन तें धरुषि नय धाने न महापट्ट ।
 धामनि विपुस प्रसापु बहें सुग्याद वीग बट्ट ॥
 यां राजनीति आगवय बह जय प्रमिद्धि विद्या परम ।
 रायबे योग नाहि गुपतिदिम ये पद मेवप प्रथम ॥५॥

गक सुमादिब—क्या भुनागिब धाम बहनी ।

पक राजा भावब—बाह ! क्या बहना है ।

दारा— दोम्नो धाज का जन्सा प्रव यही गरम पिया जाय ।
 उम्मीर है धाप लोमों की गूब तबियत गुन हुरई ?

सुगादिब—हुन्नर धाहजादे की इनायत मे वह-वह धीजे मुनने
 का मिमी जो मायाव है ।

[मुञ्चल करने जाते हैं]

दारा— (बंकेन न धनु न गीह को रोच कर) गय धनु म मुझे
 धापमे लगामिये में कुछ पटना है ।

अजुन— (गनाय कर) जैमी धाहजादा की धाजा ! (बंठ
 जाना है)

दारा— (गर के गा जाने पर) पन्धिये धापम उग मामय मे

क्या किया ?

अजुन— दाहनादा साहेब मैं महाराजा से बर्खा की घो
वह भाग-बूझा ही गई ।

दारा— (शेष से) इसने क्या मान ?

अजुन— गुदाबन्द मैं धर्ज नहीं कर सकता ।

दारा— (दुस्ते से) मैं हुबम देना हूँ जो गुफ्तगू हुई हो साफ-
साफ बयान करो ।

अजुन— (हाथ जोड़कर) बन्दानवान् दास न रानी का मूब
ऊँच मीच समझाया । मगर उमने एक ही जबाब
दिया कि धनहोनी नहीं हो सकती ।

दारा— धनहोनी क्या ? क्या हिन्दू सरदार की बटी-समाम
हिन्दुस्तान के दाहनाद के वसी-महल को ब्याही
जाय और हिन्दुस्तान की मसिका बहनाय ? क्या
पहन ऐसा नहीं हुआ ?

अजुन— दाहनादा, गुस्ताफी भाफ हो धर्मरसिंह के बान में
यदि जरा भी भनर पडी कि पर नहीं ।

दारा— पर्याह नहीं मैं उम मच्छर की भाति पीस दामूंगा ।
[दरबार का प्रवेश]

दरबार— पनाहे सामम ! बग्गी समायनगी कौड़ियों पर
हाजिर हैं ।

दारा— हाँ मैंने उन्हें बुलाया है हाजिर बन ।

[दाहनादा का प्रत्याग प्रतापतसा जाने]

मलाबतर्की—बन्दगी दाहजादा ।

शारा— बन्दगी बस्तीजी कहिए, क्या प्यार साए है ।

मलाबतर्की—अब प्रबन्धी नहीं ।

शारा— क्या उमन इन्कार कर दिया ?

मलाबतर्की—इन्कार ही नहीं उसन मर सिर को मुट्ठा-सा उठान
को तसबार लीप ली ।

शारा— प्रबन्धी देगू गा उस मगरुन का मै परवाना देता है
उम पर बादगाह क दस्तगन कराकर घाज ही
सरहद पर घमीन के पास भेज दो और उस ममभ्य
दो कि हमारी हिदायतों का ग्याम रखा जाय ।

मलाबतर्की—ओ हुकम मगर धमरमिह घमीन के फससे को
नामरुन करता है । कह कहता है कि मरे काम म
पाही दगम म जाना चाहिये ।

शारा— देगा जायगा । अभी घमीन क पाम फर्मान खाना
कर दो और बादगाह मसामन क हुजूर में धरें करा
दि धमरमिह न बगावत पर कमर बांधी है ।

मलाबतर्की—बहुत गूब ।

[मलाबतर्की का प्रस्थान]

शारा— (घबुन से) घाप खबरदार रहिये राव साहब । घाप
मीरा पासे हा धमरमिह को चनी को या तारा को
गमभाय जाय ।

[घबुन का प्रस्थान]

बाप— (स्वगत) मैंने सिर्फ उसकी एक झलक ही देखी है। क्या ही पाकीजा मूर्ख है। क्या भाग्ये हैं। बाह धरत उस न पा सका तो आगरे का मन्त्र पान ही से क्या ? (दृष्टता हुआ) त्वर देखा जायगा।

मातृवा दृश्य

[स्थान—मौमहला। अमरसिंह अकम प्रम रहे हैं।

मू छे जो हुई धीरे धाम समय—प्रातःकाल]

अमरसिंह—(स्वगत) दासता व बन्धन व बंधन का अपराध जो कोई राजपूत करेगा उसे बटोर प्रायश्चित्त करना ही पड़ेगा। यही प्रायश्चित्त आज मुझे करना है। मिह बंधनों में नहीं रह सकत। वादगाह को लुट्टी पर जाकर आकरि बजाना राजपूत व मिये देहपाई है। परन्तु राजपूतों के सोठे में मार्ग लय गया है। आज उनके भाग्य फूट गये हैं। इस पापी वेद ने बनियों की भांति राजपूतों को भी अपना काम बना लिया है। (गरी लीम लीबकर) यह राजपूतों के विनाश के लक्षण हैं। (क २ स्वर में) पर जब तक अमरसिंह की कमर में यह अमानक लमपार है और यह पर मिर है तब तक क्या भिन्ना है? राजपूत को शक्ति उमरी बटिनादया म है। अमरसिंह पिरसि म मय महीं गाता। आज या तो वाहवाही का रूप भूग होगा या राजपूतों को पत ही जायगा।

किमत— (हँस कर) पृथ्वीनाथ, सबक सर्वेय ही बिदा लिए
रहता है। और क्या प्रशंसा है ?

अमरसिंह—जा सोधता कर। (किमत जाता है)

[रानी का प्रबल]

रानी— प्राणनाथ धनु-सन्तन मे नि दस्त्र जाना नहीं
चाहिए। इस मरा कटांगी को सीजिए। यह असम
सिरोही की है और इसमे मेर सीभाभ्य का घापी
की समावेधित है। स्वामी समय पर यह सौ लक्ष-
बारों का काम दगा। एक राय माता का
घापीसंवा और मरा प्रेम दाना है। सीजिए।

[लक्ष मे देतो *]

अमरसिंह—सामो प्यारा धार इस मे गोभाय्य का उपयोग
किया जायगा। (बन्धा मे धिता मना है)

[लिन का दोर गति प्रवेग]

किमत— पृथ्वीनाथ घोड़ा हाजिर है।

रानी— ठहर। (गार कर) हामिया धारना का धाम सामो।

[बाछ हामिया धारना का धाम जाती है]

रानी— (घार का पुत्र कर) जय स्वामी का ?

[रानी की धारना उतारती है और निज करती है।

हामिया समय मार करती है।]

रंग जाघा जा महाराज

रंग जाघा जा महाराज ॥१॥

भटनर भट ऊअं मीगेही लरवार ।
 गठीरा मर ऊअं माहर व धबनार ॥
 धत्री महाराज रण जाघो ॥
 [गाघ का मगियो महिन पाते हुए प्रवेच]

राग-पीसू

रणबबा राठीर दुमाद, दात्रागी व जाये हूँ री ।
 वभी न दुग में दीन हुए हूँ ।
 य रजपूती दूष पिए हूँ ।
 माह धनी साह व धन म धव लव जीते पाये हूँ री ।
 रणबबा० ॥

रण-वबण बाये हुममाये ।
 रण प्राङ्गण रणमात धाये ॥
 मृ-धु-वगु की वग्मामा की हूँ-हूँम बठ सगाये हूँ री ।
 रणबबा० ॥

जिनरी सेग प्रबट जय माहीं ।
 जीवन-मरण विषम मम माहा ॥
 माहू साहू की पुन में जिन गेन परग जिमाए हूँ री ॥
 रणबबा० ॥

[पाते बरबर छात्री को री-छेरी का निरव देनी]
 अमरगिद—(गुला का गिर मू पन्तर) बेगी राजपूता का बरिन
 गमय जनरी महिमाघों की गला बा टै व

बीराङ्गना माता जब तक है तुम्हें मय नहीं ।

तारा— पिताजी मेरे बाणों में मूब सीखी धार है । क्या
घापने उनका अमस्कार उस दिन नहीं दया जिस
दिन मैंने उस वन्य पशु को विद्य किया था ?

अमरसिंह—देखा था बेटी मैं घाघा करता है इसी भाँति तू
घपने शत्रु को भी विद्य करेगी ।

तारा— अचर्य पिताजी देखिए मर सीर । (अमर के तरण
शोषकर दिखाती है ।)

अमरसिंह—अय बटी अय ।

[किम बीर के शत्रु स पाठा है]

किम— महाराज ।

अमरसिंह—(अमर हीकर पाव बुना कर) किमन घाघ घनहोनी
होगा ।

किमन— देगा जायमा महाराज ।

[रामसिंह पाठा है]

रामसिंह— काकाजी मैं भी बनूँगा ।

अमरसिंह—मही राम तुम महम की रगा करो । शायद घघ
हम न मिले तो तुम बदिगानी म क म समा
त्रिमम बुम में दाग न लये ।

रामसिंह— मगरात्र हम अचर्य मिलेंगे । पाहे इग अम में यही
पाह उग अम में यही । घाघ निदिबन्त पपाशिये ।

अमरमिह

अमरमिह—सब बलो किसन ।

किमन— बनिए पृथ्वीनाथ ।

तारा— ठहरो पिताजी में राखी बाँधू गी । (एली बाँध कर)

पिताजी सब पाप प्रजेय हैं ।

अमरमिह—सुष है बेटी, घर में बसा ।

[अमरमिह मर्मभेदिनी दृष्टि से पुत्री और पत्नी को देख
पोड़े को एक माछा है । बोझ गर्द उड़ाकर हवा हो जाता
है । पीछे-पीछे निश्चिन्ता मारि भी जाता है ।]

—

बीराङ्गना माता जब तक है तुम्हें भय नहीं ।

तारा— पिताजी मरे बाणों में गूब सीखी धार है । क्या
आपने उनका अमत्कार उस दिन नहीं देखा जिस
दिन मैंने उस बन्धु पशु को बिछ दिया था ?

अमरसिंह—देखा था बेटी मैं आशा करता हूँ इसी भाँति तू
आपने शत्रु को भी बिछ करेगी ।

तारा— अवश्य पिताजी देखिए मरें सीर । (अमर से उत्सव
नौचकर बिलामी है ।)

अमरसिंह—अन्य बेटी अन्य !

[किमन बीर के साथ से आता है]

किमन— महाराज !

अमरसिंह—(अन्य हाकर पास बुला कर) किमन आज मनहोमी
होगा ।

किमन— राजा आयया महाराज ।

[अमरसिंह आता है]

रामसिंह— बाबाजी मैं भी बनूँगा ।

अमरसिंह—नहीं राम तुम महत्त्व की रक्षा करना । शायद भय
हम न मिलें तो तुम बुद्धिगानी में काम बना
त्रिगम बुम में दाग न बन ।

रामसिंह— महाराज हम अवश्य मिलेंगे । आहें नग जगम में यहाँ
पाँहे उग जगम में बहाँ । धार निदिपन्न पधारिसे ।

अमरमिह

अमरमिह—तब समो किसन ।

किमन— बमित् पृथ्वीनाथ ।

वारा— ठहरो पिताजी में राखी बाँधूँगी । (राखी बाँध कर)

पिताजी अब घाप अजेय हैं ।

अमरमिह—सब है बेटी अब में घसा ।

[अमरमिह मर्मभेदिनी दृष्टि से पुत्री और पत्नी को देख
बोड़े को एव बाँधा है । बोझ गर्द उठाकर हवा हो जाता
है । पीछे-पीछे बिसना माई भी जाता है ।]

—

अंक दूसरा

पहिल्या दृश्य

[स्नान—नीमहूमा समय—प्रातःकाल एण्छोड जी का मन्दिर रानी धारणी का बाल मम्मूय घरे गा छी है तारा हाथ पीठे सामने बैठी है ।]

रानी— (मन्दिर क देवता को नमस्कार करके) हे प्रभु शरणा के पाप से हमारी धान्माओं को मुक्त कीजिए और शत्रुओं के शत्रु की रक्षा कीजिए । हे समस्त क स्वामी यदि शत्रु ही पराई जावरी बरगे तो जगत में शीघ्र कहाँ रहेगा । शत्रु मेरी कठिन परीक्षा का दिन है । शत्रु स्वामी मपमी शरणा का प्रायश्चित्त करन गय है । हे प्रभु शरणा न हो कि मे शरणागिन यों ही रह जाऊँ । हे प्रभु उन्हें बल दीजिये उन्हें बिबेक दीजिये उन्हें शत्रु और शत्रु शीजिए । वे विजयी हावरी लीं । या यदि प्रभु की मही इच्छा है तो शीघ्रानि प्राप्त करें । परन्तु शत्रु शरणा और शरणा क शरण म शरण कर न लीं ।

शरणा— माता इतनी शरणा हम का शरण्यता मही है । पिताजी क मम्मूय महे हान की शक्ति किम याऊ की है ।

रानी— येनी एक पर हजार पड़े ता क्या हा ?

शरणा— पर शरणा क शरणा कः शरणा का शरण क्या है ?

रानी— बेटी बात कहने योग्य नहीं पर कुसुमम जान कहती है। पाहबादा तारा ने तेरे विवाह के लिए सबेगा भेजा था।

तारा— (बोब ने घर-घर कंगली हुई) घोर बह सपेसा कीम भाया था माँ ?

रानी— अजुन तुम्हारा मामा। बेटी घाने पीछे सबैब उससे साबमान रहना।

[अजुन का प्रवेश]

अजुन— (हसकर) घाप मोग घभी मेरी बालें कर रही थीं मेरी उमर यही है।

तारा— मामाजी घाप कहाँ से आ रहे हैं ?

अजुन— कुछ न पूछो तारा। पाहबादा तारा न मारु में हम कर रता है। वे घौर किमी पर भरोसा करते नहीं। उनका सब काम मुझे ही करना पड़ता है। राम का बरी मुबक का वहीं। दगा घभी भी मैं वहीं से आ रहा है। (इत्यादि)

रानी— भाई महाराज घाब किमे में गये हैं। सुना है बाद पाह उनमें कुछ नाराज है।

अजुन— सब ठीक हो जायगा भाई जी घाप कुछ भी बिस्ता न करें। यह घापका भाई अजुन सब ठीक कर गया। (हँसते हुए) सब ता तारा म्यानी हो गई है अपना साम-जानि गोप मरती है। यदि वह हिन्दुस्तान की मरिजा हो सके -

- रानी— यह तुम क्या कह रहे हा !
- अजुन— यही कि शाहजादा द्वारा
- रानी— क्या चाहते हैं शाहजादा द्वारा ?
- अजुन— वह तारा को मसिका बनाने को राखी है ।
- राज— (स्तब्ध से) मैं शाहजादे का मुँह इन श्रुतियों से
कृपण दूँगी ।
- अजुन— यह बेसमझी की बातें हैं बहिन आप तारा को
समझाइए ।
- रानी— बेटी दान्त हो । (अजुन के) भाई तुम दात्रियों की
सनी बातें भूल गये । परेछू दिष्टाचार भी मही
जानते !
- अजुन— भाई मैं आप सोचों का दुम
- रानी— तो अपनी यह दुमकामना अपने ही पास रखा भाई
घोर कृपा कर तुम अभी चले जाओ । महाराज
जिसे मैं गए हैं और हम प्रतिशत घातका के द्वार
पर हैं । अभी हमें विवाद के लिये अबकाग नहीं ।
- राज— (शोक से) जाओ अभी चले जाओ ।
- अजुन— जाता हूँ परन्तु याद रगो मुम्हें मेरी दग्ग घाना
होया ।

[जाता ?]

- रानी— बेटी ऐसा प्रतीत होता है बादशाह से गहरी ठगना ।

घमरभिह

बटी पराई मया पग्ने से जो विपनि घाती है यह
घाना ही चाहती है ।

नार— माताजी बिन्ना क्या है । राजपूत की बर्तियां भा
मिट्टी की बनी हुई नहीं होती । समय पर बर्भ
घगना जोहर लिया देगी

रानी— बेटी, समय रहस यदि कुमार घा जाय मा ही घबघा
बौन जाने बस क्या हो । बेटी तूम उरुद एब पत्र
मिय दो । महागज भी यही सबत कर गा है ।

वार— (बजाए) माताजा (पंर क नापुन से जमीन
पुरबनी है)

रानी— बटी राजपूत की बटी का साधारण शिष्यों से
अधिक माहमा होना चाहिये । एक पत्र लिगो बेटी ।
मेने पुरोहित जी को बुना भेजा है व घात ही हामे ।

तारा— जमी घापनी घामा । (जाती है)
[बामी घानी है]

रानी— घमनदाना पुरोहितजी घाये हैं ।
उन्हें प्रभो म घा । (बामी जाती है) । पुरोहित घाने है

रानी— घामीबार देने है)

पुरोहित— महागनी की क्या घाना है ?
घापको घमा-रमा दाग उदयपुर जामा होगा घोर

रानी— यह पत्र महागगा को दना हागा । (एक पत्र घोर घूरा
की घेमी देकर) घाम बहुत साबघाना से घगा हागा ।

पुरोहित— घाय निदिबत गहें गमोजी धीर कुछ सदग भी है ।
[तारा की मन्दी घाली है]

मन्दी— महाराजजी यह पत्र राजकुमारी मे दिया है ।

रानी— (पत्र खर) यह पत्र कुमार राजगिह को देना होगा ।
[पुरोहित पत्रो को तथा मन्दी को घाम ग रगता है ।]

पुरोहित— कुछ जबानी भी बटना होगा रानीजी ।

रानी— यही कि पत्र-पत्र पर-दाग-दाग पर विपदा की
घांघा है । एक दाग क बिसम्ब से भी न जाने क्या
हो जाय ।

[पुरोहित बिदा जान है । रानी एक धीर आती है ।]

दूसरा दृश्य

[स्वान-घरुन दीव का घर । घरुन बरबहाला हुआ
घागा है । कमप-मरपाद्य]

घरुन— (रगत) सब भगद-भभट भरे गिर ! बड़ा घायमी
होना भी एक आफत है । मसापनगी यन्गी बहूते है
यह काम घरुन कर मक्ने है । पाटजादा भी बरुत है
यह काम घरुन कर मरत है । माना जगत में
घरुन ही घरुन है । धीर बाई नहीं है । घम बहिए
घरेसा घरुन क्या-क्या कर ? (हँस कर) यह घरुनी
गही ? किन्तु मे भी एक काँया है मुझे घान-मनमब
म मननब।तारा को घाशी दाग मे परा दूँगा ता पाँव
हवागी जान का मनमब तो मिसा हो रगा है । दरगु

बहिन मा मुझे खेम म होकर देखती है और वह छोड़गी तो सपिणी बॉं भाँति पुत्रवार मारती है । जीजाजी क मामने यह प्रधन रखता काम की रम्मी पो मन में ठासना है । तब क्या किया जाय ? हम एक ही उपाय है—मिर्फ एक हा । (मोचना हुआ घुमता है)

एक नीकर—महागज ।

अजुन— (स्पट कर) महागज क्या—तरा मिर ? सूकर । देखता नहीं हम मोन रह है । खीप म खीप उठा—महागज ? क्या कहता है खीप ।

नीकर— हजर गनी माहिबा घापका याद करमा है ।

अजुन— कह दे घाने है । घभा हम बृद्ध मान रह है । बहन जल्गी समया है ।

नीकर— (हाथ जोरकर) हजर गनी माहिबा ।

अजुन— घबे, गनी माहिबा में घण्ये (मारन होता है तोकर भाग जाता है) ताजी क विचार म हा विघ्न उदाम्न कर दिया । (घनो घानी है) घब क्या किया जाण । हाँ तो गनाजी भी एक मुगीबन है । उन्हें हम घान का बृद्ध जान मन्ना जाना सि घाई कुछ मान रहा हागा । (गना का नेकर) नौ बटा बजा बन्नाहा । न्य ममय में घन जल्गी घान माध रहा है ।

गनी— मैं भी ता मुनूँ घावरी जल्गी घान ।

अब उस घनाग पक्ष को जान लीजिए । इस वृक्ष की छाया में यही विश्राम लीजिए । सूर्य का तब कुछ कम होगा ता फिर आनन्द कुछ लिया जाएगा ।

रात्रमिह— रिपुमर्दन दया को तुम यह सुझा गया किधर ?

रिपुमर्दन— अन्नदाता घाटे सब गाए हैं और पूरे तब है । सोना विश्राम कर लीजिए ।

रात्रमिह— विश्राम नहीं । वह यहाँ का घाव था कर भागा है मैं उसे बिना मार विश्राम नहीं करूँगा । (घावें घोष बजाना है ।)

रिपुमर्दन— (घोष बज कर) तब अहिरय कुमार मैं माम को दण्ड ता लूँ । अब घोष घाव वहाँ आय माग ता है ही नहीं ।

(एकएक क्रम में मारी से निष्कास कर भागता है ।)

रात्रमिह— (विस्मात्कर) क्या रहा । यहाँ फेंक कर मारता है ।

रिपुमर्दन— एतु यहाँ का कर भाग जाता है ।

रात्रमिह— (बोले से उतर कर) अब यह पूरे नहीं जा सक्ता ।

रिपुमर्दन— (बोले से उतर कर)हाँ महाराज वह यहाँ नहीं मरती मैं घुम जाएगा । (बोला घाव बजने है)

[एक दिग्गज बामिना अन्ना उतार कर उमी से क्रम को गदगदी हुई जाती है ।]

रात्रमिह— (घावें से) बीन है यह बीन बाला ?

धम्मरसिंह—यह सुम्हाग जिबार ।

राजसिंह—(गुप्तर को मागार) यहाँ घोर भा बाई सुप्तर है ?

बालिका— बहुत है पागार व उम पार बसा ।

राजसिंह—(हगप्तर रिपुमदन से) क्या कहत हा ? इस घोररी

... व माघ उम पार जाना स्थाकार करत हा ?

बालिका— क्या तुम माग इग्ग हो ?

राजसिंह—(रुम वर) निम्सन्तहू हूम इग्गे है ।

बालिका— तब ठहरो में यहीं लिये घानी है ।

[बालिका एक घोर को भाग जाती है]

राजसिंह—रिपुमदन यह म्म वन्ध भूमि का प्रमाण है । यह वीर

बालिका धमी से भय का नहीं जानती । कोई

भिन्न-कुमारी प्रतीत होती है ।

रिपुमदन—कुमार का जय हा । भिन्न-वन्द्याग क्या रनबाग में

नहीं रह सकती ? कुमार की इच्छा यदि इस जगती

दिन्वी का पामने की हा तो इस से बचूँ ।

राजसिंह—(रुम वर) घस्ती ता है । देगा व एक सुप्तर का

गन्डे सा रही है ।

बाता— (अरुअर सुप्तर को गन्डे में बास्ती हुई बिन्हावर) मारो

मार ।

[सुप्तर बिन्हारी से घो को कोर में लिया देता है ।

बिन्हारी फिर जाता है । सब बग-बाग बन्दे है । घस्ती

कामा बहतर होती है ।]

रिपुमर्दन— (सरकी से) क्यों मे चिलीइ बनेगी ?

वासिष्ठ— क्यों ?

रिपुमर्दन— राजमहल म रहने को ।

वासिष्ठ— क्यों ?

[रिपुमर्दन धान बोड़ा बढाकर बागिका को भयभीत करने की चेष्टा करता है । बागिका बचपु कर बा-सीन सपाटे पत्ते में मारकर बोड़े को ध्याकुल कर दर्ती है । पीड़ा भाग जाता है । बागिका हँसती है ।]

राजमिह— बाह-बाह ! (पाये बड कर मोलियो की धाना रिखा कर) मइकी यह सेगा ?

बागिका— (कीचुलन म डेग कर) झू गी ?

राजमिह— (उमके गन म गहता कर) कैमा है !

बागिका— हँगती हई धपनी पु बचिया की माला रिखा कर) यह धरत्री है ।

राजमिह— तैग पर बहीं है ?

सरकी— तुम हमारै पर बलागे ?

राजमिह— वही ?

सरकी— वही मामन ।

राजमिह— बरूंगा । पोने पर बीठेगी ?

सरकी— (उन्मुत्ता से) पैठेगी ।

[राजमिह उगे उग कर पोने पर बीठ्य निव है । गब ह मो ल जाते है ।]

[भीम का प्रवेश]

भीम— नीमू, यह क्या भयना है ?

नीमू— मैं घोड़े पर सवार हूँ। तुम भी बड़ाग वापू ?

रिपुमर्दन—(घाय बड़ कर) क्या यह तुम्हारी पुत्री है ?

भीम— जी हाँ !

रिपुमर्दन—ये महाराजकुमार राजसिंह हैं। मुझरा परो

भीम— राजकुमार जुहार (बन्धी से) बयभूक उतर। राजा क घोड़े पर बैठ गई।

नीमू— (राजसिंह से हँसकर) वापू कहत हैं उतर।

राजसिंह— यहीं नीमू बैठी रह। (भीम से) तुम्हारा नाम क्या है ?

भीम— महाराज मेरा नाम सुकर्ता भीम है। (मांसे मोलावा रिगावर) यही बाग का पर है। प्यार कर पवित्र कीजिये।

[पुरोहित का आगने आगत प्रवेश]

पुरोहित— (भय से पीछे दगना घोर कापडा हुआ) रथा मरा रथा करो।

राजसिंह— [सतकार मंठी करक] निर्भय हो वाचल, क्या भय है ?

पुरोहित— पनागत महाराज मुझे भानों से पकड़ लिया।

राजसिंह— [उ घोर दुगा से] यह क्या मुनता है।

भीम— कुमार, हमने दग रात्रु का जागूग समझ था। यह आगर से आया है।

राजसिंह— घाय वीर हैं ? कहीं से घाये हैं कहीं आवेंगे ?

पुरोहित— क्या मैं महाराज कुमार राजसिंह जी के दर्शन कर रहा हूँ ?

राजसिंह— देवता मैं राजसिंह हूँ । जो कहना हो निर्भय कहो ।

पुरोहित— महाराज कुमार की जय हो । मैं घामर से घाया हूँ महाराज अमरसिंह पर बटिन समय घाया हूँ । घाय राजपरिवार की सहायता कीजिए । ये पत्र है ।

राजसिंह— (पत्र पढ़कर क्षणिकी छे) ठाकरां ब्रह्म मरने का दाण उपस्थित है ।

मव लोग—(ततवारें मूठकर) कुमार का जय हो । आजा हा ।

राजसिंह— इगी लग हम घागरे जाना होगा ।

मव लोग—हम प्रस्तुत हैं अन्नवावा !

राजसिंह— वीरवर अमरसिंह की यादनाह से टन गई है । व वहाँ अगहाय है । हमें तत्क्षण पहुँचना चाहिए ।

मव लोग—पाँए महाराज !

भोव— महाराज मैं भा हाजिर हूँ ।

राजसिंह— घमा मुझे तुम्हारी भावदययता नहीं । तुम मेजस मरु मग्नेन राजमहसों म पहुँचा लेगा । [पत्र पढ़कर बैठा है]

भोव— (पत्र पढ़कर) जा घागा दरवार ।

राजसिंह— (दायिना मे) नीतू मैं जाता हूँ ।

नीतू— क्यों जाता हूँ मन बटा ता या कि हमारे पर अमोग । वर सामन ही ता हमारा घर है ।

राजमिह— (सुरक्षित कर) नीलू, मैं फिर घाऊ गा ।

[घोड़े पर सवार होकर तीव्रता से घाघरे की दिशा को प्रस्थान]

शौधा हरय

[स्थान—घाघरे का बिना बीकान घाघ । समय—शान्ति की बड़े बादघाह लग्न पर बँटे हैं । बीकान घधीर उमराव दरवाही दरब म गये हैं । मोहन मूढ खी हैं जगह-जगह मनीष खोरण म उ हैं । बाणगाह लग्न पर निराश्रय हैं । अमरगिरि का प्रवेश दरवार में ममबनी बच जाती है । वे मन्दीरना से बरकर बादघाह की बिना मीमिस बिने घफती जगह पर जा गउ हान हैं ।]

बादशाह— (बुद्ध देर दिगी मजर से अमरगिरि की देखकर) हम मागौर के राजा अमरगिरि से यह जबाय तत्तब किया चाहते हैं कि उमने निमलिन घाही मीरगी घीर हुषम से दरबार किया घीर दरवार म घाकर घाब नहीं बजाया ?

अमरगिरि—जरीयनाह अमरगिरि मल्लनन वे निय पनक भाग मल तमवार घानने स नहीं पूषगा पर ड्योना की मीरगी का घात गुना है ।

बादशाह— हमने हुषम जारी निय से ?

अमरगिरि—वे जरीयनाह म घजं पन गा ति हुषम गाब-मामम पर निय जीव घीर यह म्पूर घाम जाला जाय ।

बादशाह— क्या धीर राजा सोच यह बाबरी नहीं बजाते ?

अमरसिंह—जहाँपनाह, उन्होंने अपनी गैरत बेच लाई है। वे राजपूत-कुसुमकंसक हैं। राठौर कभी यह घपमाम नहीं सह सकते।

सम्राज्य—(बादशाह से) तुहायन्द बीकानेर के राजा कर्णसिंह ने गाही हुजूर में धर्जों की थी कि राजा अमरसिंह मे बिना बजह मामूली-सो बात पर उनसे रार ठानी है।

बादशाह— बह मामूली बजह क्या है ?

सम्राज्य— जहाँपनाह एक मतीरे की बेस भगड़े की जड़ है। कहते हैं कि उसकी जड़ मागीर की धरती में उगी थी मगर फस बीकानेर की धरती में लगा था। उस फस का मामिक पौन हो यही भगड़े की बात है। दो राजाधों के बीच इस महज् मामूली बात पर भगडा हाका मुनासिब नहीं जहाँपनाह।

बादशाह— (अमरसिंह से) क्या यह सच है ?

अमरसिंह—सच है जहाँपनाह।

सम्राज्य— जहाँपनाह गाही हुजूम शिया मया था कि दामा परीक अपनी-अपनी फीजें वहाँ में हटा सें।

बादशाह— क्या उग हुजूम की तामीम हा गई ?

सम्राज्य— मती हुजूर धमीन वहाँ भज दिया गया है धीर राजा कर्णसिंह न अपनी फीजें बापिम मुना ली है। मगर राजा अमरसिंह गाही हुजूम से इन्कार करत है।

बादशाह— राजा अमरमिह का क्या जवाब है ?

अमरमिह— जहाँपनाह का मेरे इस घरेलू मामले में दखल रख
की आवश्यकता नहीं है ।

बादशाह— (बोध में) हमारा दुश्मन है कि घायल अपनी फौज
की रक्षा का पिस मुना में ।

अमरमिह— (हठाना में) मैं चाहता हूँ कि जहाँपनाह अपनी अमीन
का पिस मुना में करना उसकी जान की सम्पत्ती
का मैं विम्वेश्वर नहीं ।

बादशाह— (मुझे से बात होकर) अपनी सम्पत्ती का राजा अमर
मिह का दाही दुश्मन मुना दिया जाय ।

मलायक— (बोला करते) राजा माहब घायल दाही दुश्मन मानन
में गफिलत की है । इगमिह घायल पर मात्र मात्र
रूपे तुर्माना दिया जाता है ।

अमरमिह— मैं यह जहाँपनाह के घृह में गुनना चाहता हूँ ?

बादशाह— (बोध में) हमारी यही धन्या है ।

अमरमिह— (हँसते) बहुत धन्य जहाँपनाह यह तुर्माना बीन
समूह करेगा ?

मलायक— अगर बादशाह मलायक दुश्मन लेने तो मैं यह दाही
दुश्मन बड़ा साजोगा ।

बादशाह— सम्पत्ती को दुश्मन दिया जाता है कि वह राजा
अमरमिह से तुर्माना समूह करे ।

• मलाबत— (बेव से) राजा अमरसिंह घाप राजी से जुमाना प्रदा करेंगे या आपने मकान पर कुर्की साईं जाय ?

अमरसिंह—साँ साहेब, महसस एक जाने की क्या जरूरत है जुमाना अमरसिंह के साथ है। जिसको मा ने घौंसा साया हो अभी वसूस कर से। (क्यार सींकर) परन्तु इस असीम साहे की धार पर रखकर जुमाना प्रदा किया जायगा।

[मारे दरबार में जलबन्दी मच जाती है]

मलाबत— राजा अमरसिंह जुमाना प्रदा करके और दरबार के अदब का इयाज रतो।

अमरसिंह—(माव घारों करते) से जुमाना

मलाबत— फुप गैवा

[अमरसिंह का जीने की भांति उत्पन्न कर क्यार समाजत की छाती में पू म देना। मलाबत का जीत्कार मार कर फिरता। दरबार में अमदड़।]

अमरसिंह—(बारगाह से) जहाँगनाह जुमनि के गप्यों का बोझ जरा भारी था मिय्याजी मंभास म सने। सीजिये घाप गुद मंभासिए। (ओर से क्यार मारना है। वह गम्बे में टकरा कर एक बानिउड पत्थर बाट बेती है। बारगाह धाम कर तिहरी की यह बहुत मं बने जाते हैं धीर 'मार रागों' या 'मदू लों' का हाम बेी जाने हैं।)

अमरसिंह—(गुद ओर से) यह रागीर अमरसिंह पाव गेग सोहा

हाथ में निचे निभय खड़ा है । मुगलों का चप म जो
 काई माई का नाम जग्मा हो वह कुर्माणा समूह का
 व (चारों धार में हथियारबंद मजिद धारर अमरनिह
 का घेर मड है । किमन माई अमरनिह का पाठा मरर
 जररंस्तो बीज में पुम घाला है और मिराही अमरनिह के
 हाथ में पकड़ा रता है ।)

किमन— महाराज की जय हा मेयक के रक्ष श्रीमान् को इन
 तुच्छ मिषाहियों म साहा सने की साबर्यता नही ।
 किने के मड डार बन्द है । श्रीमान् पश्चिम की
 पगीस पर मड जीव में मनुष्यों की मारता है ।
 (एक मुगल को जनेऊका हाथ मारता है ।)

अमरनिह—(एक ही बार में एक का फिर और दूसरे का पड उठारर)
 बीर अब यहीं खूब मरगा टीर है ।

किमन— महीं पूष्पीनाथ रानी मां वही मिश्रथय है । (सीधे
 हाथ बड़ाकर सी गीतों को मारता है ।)

अमरनिह—(नरसर पुकारे हुए) क्या तुम्हें यहीं छोड़कर ?

किमन— (नरसर पुकारे हुए) महाराज समय पर मी मीनि
 सेबक नाम घावा परते हैं । यह म् सना घा रही
 है मदन महीं है, महाराज !

अमरनिह—(बोले को एक मारकर) किमन प्यार मिला । पीरकर
 अब हम दूसरी दुनिया में मिनगे ।

किमन— (नरसर का उचकते-कपते) पूष्पीनाथ, अमा महाराजो और

राजकुमारी का प्रबंध करना है। आप महलों में पधारिये। सुहार महाराज !

[अमरसिंह कुर्बं पर खड़े हैं। किमन सिपाहियों को रोक्ता हुआ घाब खाता है और कुर्बं पर चोड़े समेत अमरसिंह को बेगनर तलवार उठाकर प्रणाम करता है। तथा वृष्टि होकर गिर पड़ता है। सिपाही अमरसिंह पर दृष्टे हैं।]

अमरसिंह—(चोड़े को पपनी मारकर) आज बहादुर किमन ने द्युय स्वामीभक्ति निबाही। आज रमन राजपूती घात को। [बहादुर उठ देने है चोड़ा सिंह की मति गर्भ कर उठान मरणा है और कुर्बों पर से हुए बचना है।]

पाँचवां दृश्य

[स्थान—जीबहना महल का अन्न-पुर। महादनी मन्दिर के प्राङ्गण में एक चौकी के ऊपर जाम बन घारणु फिरे बनी है। सब दानियाँ यथागणन गयी हैं। तारा एक अरंगने में राजपप को देग रही है।]

रानी— बेनी क्या मद्दागज क आगमन का कुछ सदाग दीगता है ? उनके चोड़े की उदती हुई गर्व घार कोम में दीगती है। क्यों क्या तुम्हें कुछ घामाय मिसता है।

तारा— नहीं माँ पिताजी मर्ती दीग रहे !

रानी— मरने दोनों मुजा पड़न गयी है। दोनों मुजा, यह दो

भानि का धनुष दाबुन बैसा ? (पुकार कर) दामी ।

दामी— (विनीत भाव से सम्मुख आकर) महारानी का जय हो क्या आजा है ?

रानी— बूबुर रामसिंह को यही बुना साघो । देखो ये सिंह द्वार पर सेनामामय न यातें कर रहूँ हैं ।

दामी— जो आजा । (प्रस्थान)

रानी— (पुनरी दामी से) दासी ।

दामी— उरस्वित होकर हाथ जोड़कर) क्या आजा है महारानी ?

रानी— आकर भण्डार से मासती को बुना साघा ।

दामी— जो आजा । [प्रस्थान]

रानी— (दीवरी दामी से) दामी ।

दामी— (घाय बड़कर हाथ जोड़कर) जयमाता को क्या आजा है ?

रानी— तुम दाबुन विक्रमसिंह को दक्षिण द्वार पर से बुना साघो ।

दामी— जो आजा ।

रानी— (तारा से) पुत्री क्या निवालय की गोभी पर से भी महागत्र न पाड़े की टापों से उठो पून मरी बीग पड़ती ?

तारा— मरी मां नही दीग पड़नी ।

[तारागत का लक्ष्य हाथ में निव प्रवेश]

रामसिंह— क्या आजा है बारात्री ?

रानी— महागत्र धमी मरी लपारे ?

राममिह— नहीं काशीजी ।

रानी— कित्ने म कुछ घनहोनी हुई है । यहाँ क समापार जानने का क्या उपाय है ? क्या गुप्तचर मया है ?

राममिह— गया है काशीजी ।

रानी— (पुत्रो के) ठाग बेटी क्या कुछ दीयता है ?

ठाग— नहीं माँ कुछ भी नहीं ।

रानी— पुत्र ?

राममिह— काशीजी ?

रानी— एक घर और भेजो ।

राममिह— जो छात्रा ।

[बागी का प्रवेश]

रामी— कुमार पर धाया है ।

रानी— उसे यहीं भेज द ।

[बागी का प्रत्याग । पर धाया है]

पर— महागत्र कित्ने म भीतर कुछ घनहोनी घन्ना घटी है ।

रानी— तुम भीतर नहीं जा मके ?

पर— नहीं मा, तिम के सब डार बन्द हैं । भीतर मुड हो रहा है ।

राममिह— तिमस मुड हो रहा है कुछ प्रगोत हुमा ?

पर— नहीं कुमार भीतर का कोई समाचार आमगा मयाय है ।

रानी— तुम फिर जातर मन्दग माया ।

अर— जो घाजा मावा ।

[प्रस्थान]

रानी— पुत्र ।

राममिह— बाबोजी ।

रानी— महाराज जूझ गये ।

राममिह— काकीजी अभी कुछ निदवय नहीं कहा जा सकता ।

रानी— छोट्टियों पर कुछ बितने पौदा हैं ?

राममिह— पुत्र दो गी हैं ।

रानी— उनका मरुतार कौन है ?

राममिह— यह सेवक है ।

रानी— पुत्र रावधान रहना कुल म दाग न मगने पाब ।

राममिह— काकी क्या मैं किस म जाऊँ ?

रानी— हमें प्रतीक्षा करनी चाहिये तनिक धीरज धन ।
 डार रदा का टीक प्रवच बगे जाओ । तन्तु
 उहरो—बछ सेनिक माग में लगादो ।

[राममिह का प्रस्थान]

[मासती का प्रवेश]

मासती— क्या घाजा है माना !

रानी— (गरी होकर) मानतो क्या सब प्रवच टीक है ?

मासती— (घोंगो में घोंगू भरकर) हाँ मा, भण्णरपर बे निरट्ट
 ही मपन्न पुत्र वीम जतनतोम पण्ये पक्क बर
 न्चि थप है । नौप बमर में बाण्ण विदी है डार
 महाराजो का पण्य है ।

रानी— (पति पर अपने मोनिषों के जाने म्पीछाकर करके) महाराज की जय हो । अभी आप यहीं ठहरिये । (पुकार कर शशिपी से) अरु, चारली का पास सापो ।

अमरमिह—(बटार रानी के सामने रुक कर) प्रिये तुम्हारी यह बटार अपनी बरनी कर गुजरी । समाम हिन्दुस्तान के प्रसापी बादशाह के सामने जिसके तेज स बड़े बड़े छत्रधारियों के छत्र भंग हाते हैं जिसकी मुगल सेना के पराक्रम से बड़े-बड़े राज्य ध्वंस हो गये उसी बादशाह शाहजहाँ की धर्मियों के धामे बन्सी ससामतियों के कलेजे का सोहू इस प्यारी बटार ने तृप्त होकर पिया । जहाँ दरवार में उसकी साज पड़ी है । अब मैं हूँ और बादशाह । मैं निबटू खू गा-धागर की जड़ हिला डालूँगा ।

[नशिपी का धामों का धाम निचे प्रवेश रानी परद्वार करके धानी बगानी है ।]

चारण— धनी गन्ना धमनाता । जय पृथ्वीनाथ महागज ।
अमर माता रूपा महागज ।

स टाकर धन धापणों देता राजपूताह ।
धड़ धग्गी पग पाबड़े धन्नाबमि गीपोर ।
धोय नमाड़े दुगणों करणों धन, मिगीह ।
परगन्ता धन धगियो धोली ऊमर माह ।

बाल मुण्डता मंगली मूर्छे भाह चक्रन्त ।
 ब्येरी ही पह्पाणियों ब्येरी मरणों वन्त ।
 अमल बघोसा ऊभरें हीर्दा के सर रंग ।
 पीवज के घर जीबना मीम म सीजे सग ।
 विन माये याड़े दसा पोड़े गरज उतार ।
 तिण मुरारी नाम से भट छों ही भटवार ।

[मोरल मुनाठा है]

हीमत कीमत होय हीमत विन कीमत नहीं ।
 करें न आदर कोय रह बागद प्युँ रात्रिया ।
 मरा भरत परमाणु जो उभा संके जगत ।
 भावन तप्यो न भोग रावण मरता रात्रिया ।
 धुरी सोहि पिछागिय सने घरम के हत ।
 पुग्जा-पुरजा बट पड़े बबहुँ न छोड़े घत ।
 एक जग गिणु हों, एक हों, बुझ हों अह असहाय ।
 तेगी दका गिह क गपन हूँ नहि भाय ।

[राजदरंघ आदर अमरमिह के पारों का उल्लेख करत है ।]

अमरमिह—नामदार घोत्रमिह को बुनायो ।

[नेवत जाना है]

[अत्रलि का उल्लेख]

धीरजमिह—य पृथ्वी-गण मकर उपस्थित है ।

अमरमिह—नामदारकी अभी बागदारी को गणित्युक्त गाँव
 का पट्टा बन्दो घोत्र मिहो पाव दखर बिन

हैं और पौजवार पर हुजूम भेज चुका है ।

[अमरसिंह का गहरी उत्तबार लिये प्रवेश]

अमरसिंह— महाराज शाही पौज ने महसू का घेरा छोड़ लिया वह हट रही है ।

अमरसिंह—तुम भी मुन सो रामसिंह ये अजुन गौड़ कहते हैं कि वादशाह मुसह करमे को तैयार है ।

रामसिंह— पहल बह अपने अपगाय की क्षमा मांगें ।

अजुन— बादशाह क हम सोग चाकर हैं और घाड़े समय म उसन हमें आश्रय लिया था । फिर यही उत्तबा बस बहुत है और हम अरुम हैं । सब बातों पर बिचार करके ही हमें निर्णय करना चाहिये ।

रामसिंह— (उत्तबार निकाल कर) यह उत्तबार जब तक हमारी सहायक है हमें, और बिना सहायक की आश्रयकता नहीं है ।

अजुन— भाई, अवसर वेचकर ही काम करना बखिमाती है ।

अमरसिंह—मे बादशाह को भी समाबतगी के पाट उतारो ता हो मरा नाम अमरसिंह ।

अजुन— आप शोध का त्याग दें और बादशाह क पाम अल पसे तथा जिग भाति दरतूर है देरबांग के नियम का पालन करें ।

अमरसिंह—ग वात का क्या परिणाम है कि बादशाह दगा न करगा ?

अजुन— मैं ब्रामिन हूँ ।

राममिह— हम बाण्णाह पर अब विश्वास नहीं कर सकते ।

[अमरमिह बिता करता है]

अजुन— भाई माप साधकर देखिये, जब सगडा मिट रहा है
तब तार मोस लेना बुद्धिमानी नहीं ।

अमरमिह— अगर भादणाह दगा करेँ ता ?

अजुन— तब हम मर-मिटेंगे और वह तसवार असावेंये
जिसका नाम ! (तसवार बंदी करता है)

अमरमिह— अच्छी बात है मुझे स्वीकार है ।

राममिह— पर मेरा बिल बसा हो रहा है ?

रानी— मैं न जाने दूँगी । यह देखो मेरी बाहिनी मुझा फडक
रही है ।

अजुन— जब इतना बड़ा भादणाह मृत गया तब मुझ का
बिरोध करना बुद्धिमानी की बात नहीं ।

रानी— बिल्टु कितने मैं दगा हुई तो ? बाण्णाह मे मड़बड़
की तो क्या होगा ?

अमरमिह— मरी यह तसवार तो है ।

अजुन— महाराज यदि कुछ हुआ तो हम मुगल सन्त को
उपट देंगे ।

राममिह— तब मैं भी समू गा महाराज ।

अमरमिह— नहीं पुत्र, तुम महलों की रक्षा पर रहो ।

रानी— स्वामिन् क्या आप ने जाने का इरादा पक्का कर लिया ?

अमरमिह—प्रिय चिन्ता की कोई बात नहीं !

रानी— (अनु न से) भाई मुझे, बचन दो कि तुम महाराज को सही-सन्नामत यहा पहुँचा दो।

अनु न— मैं बचन देता हूँ भाई !

रानी— दापय सो तसबार छुपा !

अनु न— मैं तसवार छू कर दापय सेता हूँ कि यदि महाराज को चार घड़ी में न न आऊँ तो शत्रिय पुत्र नहीं ।

रानी— (घाँगा में घाँसू मरकर) अचछा हाय दो भाई ।

अनु न— (हाय पर हाय मार कर) सो हाय दिया । इन्हें चार घड़ी में यही सा हाजिर करूँगा ।

रानी— (ठेकर) हाय मुझे सब्र नहीं आता ।

अनु न— (हथकर) बहिन तुम मुझे गैर न समझती सो मरा इतना अपिदवास न करती ।

अमरमिह—रानी अनु न हमारा सम्बन्धी है यह भी शत्रिय है ।

रानी— हाय माय बंम मन को समझाऊ ?

अमरमिह—बसा अनु न में तैयार हूँ । (गुहार कर) भाई है ? मग घाटा साय ।

राममिह—बाबाबा मुझे भी गाव ल बनिये ।

अमरमिह—नहीं बग तुम मर्ता का रसा करग । मैं तीघ ही पाऊँगा । (भाड़ा घाता है ।)

धमरसिंह—(उठन कर बड़न है) धनो धनु म ।

धनु न— (घोड़े पर चढ़ता है) बलिये महाराज !

रानी— (रोकर धनु न का हाथ पकड़ लेती है) धनु न माँ
मग यह मुझाग यह सिद्धू लरे हाथ में है ।

धनु न— (हँसकर) बिन्दा म बने वहिन मैं महाराज को
धभी बापम सागा हू ।

रानी— (घेरी हुई) स्वामिन् मत जाया । (घोड़ क घोड़े बलती
हुई गिर पडती है । धमरसिंह धीर धनु न दोनों बने
जाने हैं ।)

सामर्थ्य दृश्य

[स्थान-विशा घाणरा । समय-शीमरा पहर । बादशाह
शौरान गाम में बंटे हैं । बघ जुने हुए उमठ हाथिर हैं ।]

बादशाह— (एक स्वाजामरा में) हम सब बुद्ध तपमीम से गुना
पाह्ये हैं ।

स्वाजामरा—गुनायम गुनाम में घाणों देगा भयान दिया है ।

बादशाह— क्या धमरसिंह शत्री-गुनी ह्योनियों तन घाया पा ।

स्वाजामरा—त्री हूकर, धनु न उम दरबार में माफी स्थान का
पकीन करा कर कोम हार पर रिम में ल घाया पा ।

बादशाह— फिर क्या हुआ ?

स्वाजामरा—उपने गिटपी श्री राह ज्यों ही मुा कर भीतर
बदम गया कि धनु न ने पीछे से गट ग तपवार म
उगता गिर उड़ा दिया ।

बादशाह— दगावान् !

रुखाबामरा—मगरवहादुर राठीर ने फुर्ती से बटार फेंक मारी
घोर अजुन की नाक काट डाली ।

बादशाह— बेईमानी नमक हुरामी नमीने की सजा ।

रुखाबामरा—अम्देकुटा वह अपनी बारसानी का इनाम हासिल
करने हुजूर की कदम मोसी हासिल किया चाहता है ।

बादशाह— उस दोखली कुत्ते को हाजिर करो ।

[रुखाबामरा जाता है]

[अजुन का मुँह से पट्टी बाँधे हाथ में अमरसिंह का मिर
लिये प्रवेश ।]

अजुन— (मिर पेग करके) जहाँपनाह यह बागी अमरसिंह
का सिर हाजिर है ।

बादशाह— (सिर देताकर छोकरने खर में) अफसोस एक बहादुर
जयामर्द का इस तरह तारमा हो गया ।

अजुन— हुजूर इस सेवक का इस मुहिम में बड़ी बहादुरी
दर्श करमी पड़ी ।

बादशाह— (स्वन्न से) हम तुम्हारी बहादुरी का पूरा हास मुनना
चाहते हैं ।

अजुन— जहाँपनाह मुझे जो-जा जीहर दिखाने पड़े, वह धो
बयान से बाहर है । इस सेवक का इस बागी को
मारने के निय अबरदस्त सड़ाई सड़मी पड़ी । वहाँ
तक गईं बड़े मजमम उठाने पड़े घोर जान की
जीगिम भी उठानी पड़ी ।

- पादशाह— (शोक रोकर) शायद सबसे पहला पाप तुम्हारी नाक में लाया है और नाक उड़ गई है।
- अबु न— जहाँपनाह छीना भपटी में न जाने किसका खजर लग गया और नाक बट गई।
- पादशाह— अमरसिंह की सांग कहाँ है।
- अबु न— यह गिड़की में रखी है।
- पादशाह— (शोक से) और अब तुम इनाम का क्या इलाक़ से पाये हो ?
- अबु न— जी हाँ हुज़ूर, घन्टे को बाग़ह सौ गाँवों का पट्टा और अमरसिंह का खतवा इनामत हा।
- पादशाह— इतमीनान रखो ! तुम्हारी काबिलियत और गिदमत की बद्र की आयगी। (एक मुसाहिब से) इस बदनसीब दोऊगी कुत्ते से बहो कि सप-सप सारा माऊग हमारे हुज़ूर में बयान करे। इमने किस तरह अपने समय गिरतेदार अमरसिंह को धोखा दिया सब सब बयान करे। अगर भूट बामेगा तो बिना ज़मीनेज़ कर लिया जायगा और ताम कुत्तों से कुचवाई जायगी।
- अबु न— जहाँपनाह गुलाम की जी बग़्दी हो। मयक हमानी ब ग्याम से मैं यह काम किया।
- पादशाह— तूने अमरसिंह को धोखा नहीं किया ?
- अबु न— गुदाब लेगा ही किया।
- मुसाहिब— तुम उगे मापी निमाने क बीन-बरार करके नहीं पाये थ ?

अर्जुन— मैंने ऐसा ही किया था जहाँपनाह !

बादशाह— तुम महज दगाबाज और नमकहराम ही नहीं हो बल्कि उन दोगले और कमीमे गुनहमारों में हो जो हर काम में बदकिस्मती से पैदा होते हैं और जिनकी बजह से काम की काम को नीचा खेचना पड़ता है। तुम्हारे जैसे गुनहमारों को माफ़ करना और उन पर रहम करना न सिर्फ़ इन्साफ़ का सत्ता बाटना है बल्कि मुनाह करना है। अमरसिंह तन्त्र का बुद्धिमान न था। वह बसूरदार था और उसका बसूर महज यही था कि वह अपनी पत्नीहठ बर्दाश्त नहीं कर सकता था। वह एक ज़र्बान्त बहादुर था। उसका बसूर एक ऐसे कमीन घादमी ने किया जो उगला हरीकी रिश्तेदार और राजपूत है। (स्वाभाव में) इस दोषगी का गिर मुँह कर और बाना मुँह कर, गधे पर चढ़ाकर दाहर में घुमाओ और डोल पीटकर इसकी करनी दुनिया पर रोगान कर दो। फिर जन्सानों को सुपुत्र कर दो कि वे इसे जिन्या कमीदोज़ कर दें।

[स्वाभाव में अर्जुन को पकड़ कर ले जाते हैं वह रोता बिन्नाया जाता है।]

बादशाह— (एक बुलाहिय में) अमरसिंह की लाश को सुर्ज पर रख दिया जाय और वह रात दिन ठा पड़ी रखी रहे।

जाफर फौजदार को हुकम है कि फौज का एक दमठा लेकर तीसहत्ता दस्तम कर सें और वहाँ का समाम यजाना चाही हुकूम में पेश करें । इसने सिवा अमर सिंह के भतीजे को फौरन चाहामावदगी यजाने को हाजिर करें ।

[बरबार बर्गास्त होता है । जाफरगों और मुसाहिब बाब साह को बोनिय करके बिबा होत है । सब बरबारी इन एन होतै है]

बादशाह—(स्वगत) छस्तमत भी बसी सबसीफदेह चीज है । बादशाह होना भी एव बदनसीबी है । अमरसिंह की येवा पर अमर में रहम करू तो बरबारी चीज बढेंगे । अमरसिंह ने चाही अदब भंग किया है और ऐसा काम किया है जो तन्त्र-मुगलिया की सवारीय में पहले कभी नहीं हुआ । अमर देखना है, क्या हाना है ?

[गोबता हुआ जाता है]

अंक तीसरा

पहिला दृश्य

[स्नान—नौमहता । समय—मध्याह्न । रानी बाम शोले मन्दिर के भीतरी कमरे में प्रतिमा के निचट ध्यामास्य बैठी है । ताप प्रतिमा के पाये धूप जला रही है । शामियां स्यास्थान पड़ी हैं ।]

रानी— (मन्दिर के देवता को लक्ष्य करके) हे देव मैंने सबैव ही मन-बचन-कर्मों में धर्म निवाहा है । धात्र मरी कृपास नहीं । धात्र मुझ मूर्खा ने विजयी स्वामी को फिर से धाप क मुँह में भोज देने की मूर्खता की है । हे देव, धब तुम्हीं उन्की रदा करो । हाय मेरा मन कमा कैसा हा रहा है ।

एक शामी—रानी माँ धाप चितित न हजिये ।

रानी— मैं धीरज नहीं रग्य सकती । मेरा मन बेचैन है । कोई भय भायना मेर मन में प्रबल कर गई है । यह तेगो धपराकून यह शृंगाम दिन म रो रहा है । हे भयबाम धप क्या होन वाला है !

[रमन्दिर का शोले गिर बरहनाम प्रवेश]

रामन्दिर— बाकीजी

रामी— (गरी हाकर) समझ गई महाराज बीरगति को प्राप्त हुए ।

रामसिंह—काकीजी ! हम लुट गये । (रोजा है ।)

रानी— भीरज रज पुत्र ! यह राजपूत के रोने का समय नहीं । क्या इतने बड़े बादगाह ने दगा की ?

रामसिंह— नहीं काकीजी ! पापी मामा न दगा की ?

रानी— (सम्भ्र होकर) घब्रु म ने पाप किया !

रामसिंह— उस घपम ने लिङ्की की राह ल जाकर—ज्योंही महाराज मिर भुकाकर घुस, पीछे से तलवार का भारो धार किया ।

रानी— (दगकर सिपर दृष्टि से घाकाय की घोर देखकर) घन्त म यह दुर्धय भीर इन विदवासघाती के हाथ इस भाति काम घाय ! तिमकी बहिन के मस्यक पर उन्होंने सौभाग्य बिह्न घट्टित किया पुत्र ! उस कायर-बुद्धी घपम का मिर काटकर मेरे सम्मुख ल घायो । मैं देखकर कयेजा टन्डा करे ।

रामसिंह— यह घपमी बग्नी का फल पा घुता । बादगाह ने रज विदवासघाती का मिर सुँड़ा कामा सुँह करान नगर में घुमाया—पिर त्रिन्दा जमीन में गड़वा लिया ।

रानी— (घाँसू की घोंपनी हुई) हाय, यह मुग्घु क्या है घोर यह जीयल भी ! राजपूतनी का जीवन पितना खल्ल-जामीन होता है । कम में घम्पुत्तित बुम्भरनिदा भी—घात्र उमरा गौरम विकाम हूषा घात्र ही यह मूग कर ममाज हो गई । ग्यामी के प्यार की केवम लख कोर

देनी । वह पित्त को मयुर और तीखी सगती थी ।
 आज उसके नाम पर मृत्यु बैसी ध्यारी सगती है ।
 यही मृत्यु घपमी सुख गोद म भरकर मुझे स्वामी
 तक पहुँचा देगी । (बुटने टेक कर) हे स्वामी ! हे प्राणे
 एवर ! तुम्हे प्रतीक्षा करनी पड़ी । ठहरो ! मैं धाती
 हूँ । (एक निह मे) पुत्र !

राममिह— (हाथ जोड़ कर) बाका जी !

रानी— अब अन्तिम व्यवस्था करो । मैं मती हाऊँगी ।

राममिह— ओ धामा बाबाजी ! सेफिन बाबशाह ने हुकम दिया
 है कि महागज का शरीर सात दिन कुंज पर रक्खा
 रह । ती-महला दगास करने और राजाना जन्म
 करने को भी बाबशाह न फीजें भेजी है ।

रानी— (नाचि की भाँति जोड़ गाटर) क्या कहा ? त्रिग नर
 पादूस न जीने-ओ घपमान म सहम किया और एक
 घात पर भरे दरवार में लोहा लिया उसके मृत
 शरीर का तमा घपमान होगा ? हमें घपनी घाम
 निमानी होगी । (निहरी की भाँति पत्र कर) मैं घभी
 रिसे मं जाऊँगी मेरे यौर पति की तमबार साथो ।

राममिह— (रानी के वर दृष्ट कर) बाबाजी जब तक यह मयक
 जीवित है घाप को बष्ट करने की आवश्यकता नहीं !
 घाप घामा लीजिए, मैं महाराज का शरीर लेने
 जाना हूँ । परन्तु बाबाजी, यहाँ की रथा का

रानी— बिम्बा नहीं वीर, तुम महाराज का वीर तुरन्त न
घायो ।

धर्मसिंह— जा धाजा बाबाजी ! हाँ मेरी एक विनय है । यदि
उचित समझी जाय तो बत्सूजी को संशय भिजवा
दें । वे राज्य के पुराने आकर हैं धायर ही में हैं ।
महाराज से या ही एक माधारण वाम उनकी गटक
गई थी । वे बड़े वीर हैं ।

रानी— पुत्र, यदि वे न घायें ?

धर्मसिंह— जब महाराज ही न रह ता ह्य विसने ? फिर ऐसे
समय क्षत्रिय ऐसी बातों का विचार नहीं करते ।
एक सन्देह दाहवाज पठान के वाम भेज दीजिए वीर
बू दी को साँझी भेज दी जाय ।

रानी— (दाँवू बिचकर) बसो वीर, तुम ठीकाली बग । मैं
बत्सू जी को संशय भजती हूँ ।

[रानी एक तरफ़ लौटती न जाती है]

दूगरा हृदय

[रवान-दायक बत्सूजी की हृदयी । समय-बग्यादा
रनोईपर का दाहरी बाग । रानी वीर दागिनी । बत्सू
जी की रनोई का मरवाय हो रहा है ।]

दागी— रानीजी धनधे ह्य गया !

रानी— बसा री ?

दासी— बीरवर अमरसिंह काम धार्ये ।

रानी— मुन तो चुकी है ।

दामी— और उनकी सास मुज पर डास दी गई है ।

रानी— मुना तो यही है ।

दामी— हाँड़ी रानी सती होना चाहती है ।

रानी— यह उनका धर्म है ।

दामी— पर उनके पास सहायक कौन है जो बादशाह से मार्ग से ।

रानी— राजपूतनी के हाँड़ा सम्बन्धी तो है ।

दामी— रानीजी अथवाय दामा हो वे क्या इस समय यहाँ है ?

रानी— तो इसमें मैं क्या कर सकती हूँ ?

दामी— हाँड़ी रानी न महाराज से सहायता मांगी थी ।

रानी— फिर ?

दामी— महाराज ने अरणागत अडसा का सहायता दम से इन्कार कर दिया ।

रानी— है इसमें कुरा क्या हुआ रा ?

दामी— रानीजी हम अल्पमति दामी है अथवाय दामा हा ।

रानी— कद तो गही अथवाय की क्या बात है ?

दामी— रानीजी अन्त महाराज हाँड़ी रानी के पति क मेघर वे उन्हीने उनका धम्म राया था ।

रानी— है, तो तुम सोच भी महाराज व इस काम का पतिव्रत समझती हो। क्यों ?

रानी— सेबिका का यह साहस नहीं। पर महारानी सर्वत्र मही बर्षा हो रही है। हमारे महाराज ता बड़े वीर हैं।

रानी— वीर हैं यह तुम्हने किसने कहा ?

रानी— यह बात तो जगद्विख्यात है।

रानी— होगी।

रानी— महाराज कांसा घारांगन पधार रहे हैं।

रानी— तो सोहे के पास व भोजन परोस। सोहे का ही सोचा रण दे।

रानी— (विस्मित होकर) यह क्या रानीजी ?

रानी— और मुन।

रानी— जी।

रानी— यदि महाराज या मैं इस सम्बन्ध में कुछ बक बक करें तो तुम साग चुपचाप गिगक जानी।

रानी— जा घाता रानीजी।

[रानी का प्रस्थान]

दूसरी रानी— दरबार कांसा घारांगन पधार रहे हैं।

रानी— मज्जी बात है।

[बम्बूजी का प्रवेश]

रानी— घाए महाराज, इपर पयाग्वि ! यह घासन है।

बस्वूजी— (सोहे के पात्रों को देखकर) हैं यह क्या बेहूबग है !
किसने यह साहस किया ?

रानी— (विस्मित होने का भाव करते) क्या हुआ महाराज ?

बस्वूजी— किसने यह सोहे के पात्रों में भोजन परामा है ? सोने
चाँदो के पात्रों का क्या हुआ ?

रानी— (रानी से) क्यों री यह क्या बात है किसने यह
अपराध किया है ?

बस्वूजी— मैं उसे दामा नहीं बना गा । मरत ऐसा अपमान ! यह
साहस किसने किया सीधर घोसो ?

रानी— घोसो री महाराज उसका फिर उतार लेंगे यह
भयंकर अपराध है । इनके सिय दामा नहीं है ।

[सब शर्मियां बुल गयी हैं ।]

रानी— घरी अमागिनियो ! क्या तुम्हें नहीं मासूम कि महा
राज सोहे से भय गाले हैं । महाराज के सामन साहा
रगा किसने ?

बस्वूजी— (शोक से) रानी, तुम यह क्या कह रही हो ?

रानी— कुछ नहीं महाराज यह भूगर्ण इतना भी नहीं जानती
कि यह एक अनिय का शौरा है । यहाँ माने-चाँदी का
धाय ही घोसा दते हैं । यहाँ सोहे का क्या काम ?

बस्वूजी— (शोक से लाल होकर) क्या यह अनिये का शौरा है
क्या मैं सोहे से भय गाला हूँ ?

रानी— महाराज आपके इस गुरु को यह मूर्खाएँ नहीं जानती। असत्य इलका आज फिर काट डालिए।

बस्त्रुत्री— (शेष स वापता हुआ घामे बड़कर) क्या तुम मेरा उपहास कर रही हो रानी!

रानी— नहीं महाराज! क्या यह असत्य है? यदि आप लोह से भय नहीं खाते तो क्या आप इस समय यहाँ कौसा प्रारोगने पधारते! क्या यही आपके दायित्व की मर्यादा है। राठौर की सास बुर्जी पर पड़ी हो जिस का आपने पीढ़ियों से नमक खाया है, और उनकी रानी ने मुँह से बोल कर सहायता माँगी और आप ने दरगागत बबसा को निरास कर दिया।

बस्त्रुत्री— उन्होंने मेरा अपमान किया है।

रानी— आप इसका क्या पात्र हैं।

बस्त्रुत्री— वे मुझे दासीपुत्र कहते हैं।

रानी— आप निरक्षर दासीपुत्र हैं (घामे बड़कर लम्बार छीन कर) जाइये महाराज, स्वादिष्ट भोजन साने-बाँसी के घासों में पानेगिये। दासीपुत्र की यह प्रमाणिनी पानी दुर्भाग्य मे असस दात्राणो है। यह अभी दासी पुत्र के स्वामी की साग को सोहा बजाकर लावेगी। देगूँ प्रतापी मुगलों की लम्बार म जितना पानी है! पानी से दासियो लम्बार लकर मेरे माय बल्लो!

[जाता बाहरी है]

बल्लूबी— महाराजी !

रानी— (सींकर) क्या है महाराज !

बल्लूबी— (घाने वर पुटने टेकर) मुझे दागा करो महाराजी । मैं क्रोध में प्रभा हो गया था । तुम बीरांगना हो घम्य हो तुम ! तुमने मेरी घाँवें छोल दीं और मेरो साथ रगसी । सो यह ठसवार घपन सौभाग्यशाभी हावों से मरा कमर में बाँधा । फिर देसना इगने औहर ।

रानी— (तनवार को घातों में लपा कर) घन्य महाराज ! यह तो मेरे वीर स्वामी का घावाय है जिनकी परण दामी बनार मरा जम सफ़ा हुआ है । जिनकी वीरता का घोंगा राजपूताने में पर पर यम रहा है । यह बली स्वामी का स्वर है । सोजिए महाराज इग कृपाण को सम्मानिये और कर्तव्य का पासन कीजिए । (तनवार देती है) ।

बल्लूबी— (तनवार बाँधकर घाने गली पर घम्य रगत हुए) रानी सब में प्रभा ।

रानी— जादण महाराज हाँड़ी रानी घट्टे राट में है ।

[रानी का सेत्री के प्रभाव]

रानी— गाए ! गला क सिए भोजन क घाने सु बिना भाजन सिए गाए गाए । सब दग जम में दयाम म होंगे ।

हाथ र बटार क्षत्रिय धम ॥ (पट्टा गाऊर पत्नी पर मिर पढ़ी है)

तीसरा दृश्य

[स्थान—राजवाजगी का डेरा बड़ धान गुन मरीचमूम क गाब बंग तनबारें माऊ कर रहा है । पीछे बघ है । दो बार पट्टान पास बेंडे है । एक गंजरी बजाकर बुद्ध वा रहा है । घट्टाजगी ने बाकी पर मढ़ी बाँध रखी है]

[पत्रवाहक का प्रवेश]

पत्रवाहक— क्या यही घट्टाजगी पट्टान का डेरा है ?

राजवाजगी—(गड़ होकर) यही गुमाम घट्टाजगी पट्टान है ।

पाप वहीं स घाये है महारबान ?

पत्रवाहक—मैं मौमहन स घा रहा है ।(गन देता है)

राजवाजगी—मरे मेहरबान बोम्ब महाराज धमरगिह का नियामतनामा माए हा ?

(पत्र को बूम घौर घीणों क लपारर) गुदा उग्र यहादुर को बरकत द त्रिगन प्याम को पानी बेपर उमपो जान बचाई । उमा के काम यह त्रिम्म धोणी-खाणी बट कर काम घान यही घारू है । महाराज धरद तो है ?

पत्रवाहक—पापही सब हामान पत्र पढ़न ग जात तैवे ।

राजवाजगी—(गन पढ़कर उग्र ब्रमा के गढ़ा हो जात है । दोनों बन्ने)

पर हाथ रखकर) एँ यह क्या मुन रहा हूँ। मेरे महारवान महाराज मारे गये ? (दोनों हाथों से धाँवें बन्दकर सेता है) जिसकी घराबरी का सेगदिस जर्बामर्द पैदा नहीं हुआ। (पुन से) बेटा नबीरसूस ! अभी कबाल के सब सोगों को इकट्ठा करो।

नबीरसूस— बहुत धम्दा धरवा जाम ! (जाता है)

[धीरे-धीरे बहुत से पठान इकट्ठे हो जाते हैं।]

राजबाजुर्ग—भादयी हमारे सामने एव मिहायत पाकीजा सवास दरपेदा है। घाप सोगों को मानूस है कि नागीर के राजा धमरमिह राठीर मे एक बार मेरी जान बचाई थी और मुझे पगड़ीबदस भाई बनाया था। हामांजि मैं माचीज मिपाही था और व राजा और पाही मानसबनार थे। उसी दिन म मैंने खुशाम दी थी कि यह जिरम और रुह घापकी हुई। तब स गुदा से यह खुधा मनाथा रहा कि गुदा बहु दिन व रि साय पठान की दोस्ती का जोहर देवें। घाज राजा धमरमिह मारे गये हैं और बादगाह म उमरी साज बुर्ज पर रगवा दी है। बेवा रानी ने मुझ माचीज को इस घाड़े वक्त में दाद पर्माया है और यह पठान घय घपने का पाही पौज स बानी बगर दना है। यह मरी दज्जत का और इम्सानियत क

सुजादे का महास है। यह पठान भी तसवार उसके दोस्त के निय है। कौन बहादुर मर माय बसेगा ?
 नबीरसूल—घम्वानान ! मैं रानी के लिये जान दूंगा ।

शाहबाजगों—शाहबाज बेटे ! घोर कौन जवाय है !

एक बुदा सिपाही—दास्ती दुनिया में बढ़ी बीज है। दोस्ती के लिये जीते सब हैं पर मरन वास बहुत कम है।
 दोस्त शाहबाज ! मैं भी तुम्हें घपना मर नजर करता है।

शाहबाजगों—घाप घनस मय्य है। इम्मानियन पापकी घागों में टपकती है। घोर कौन बहादुर है !

एक नययुपक—हम बागगाह के सिपाही हैं हमन तसब का नमक गायी है हम बागी नहीं हो सकते ।

शाहबाजगों—घमर यादगाह तुम्हारे मने को जमीन करता, सब भी तुम दाही ममर हमारी का दम करते ! हम दाही नीरर जकर हैं मपर सिपाही का फज घना करने को । घमर बागगाह मसामत हम पर तेमा मार दासत है कि हम इम्मानियन के फज को घना करना ज्यादा बेतर ममभे जो हमें माजिम हा जाना है कि हम नीररो को मुसाफी को चायात्ताफ रगे श्याबि यादगाहों का यादगाह यह गुनावन्द बनेम है किमन हमें इम्मानियन ने है। इम्मानियन का

वर हाथ लगाए) एँ यह क्या सुन रहा है। मरे महाराम महाराज मारे गये ? (दोनों हाथों से धीरे बन्द कर देगा है) जिसकी बराबरी का शररिस जर्बामर्द पैना नहीं हुआ। (पुत्र से) बेटा नबीरमूम ! अभी कबाल के सब लोगो को इरुटा करो।

नबीरमूम— बहुत धरुधा धरुवा जान ! (जाता है)

[धीरे-धीरे बहुत से पठान इरुटे हो जाते हैं।]

शरुबाजुराँ—मान्यो हमारे सामने एक निहायन पाकीजा सबास दरुपेस है। धाप लोगो को मामूम है कि मागीर के राजा धर्मरसिंह शठीर न एक बार मरी जान धरुधरुई धी धीर मुझे पगड़ीबदस मरुई बनाया था। हामाकि मैं माधीर निपाही था धीर ब राजा धीर पाही मानमबदार थे। उमी कि म मैने पुवान दी थी कि यह जिम्म धीर रूटु धापरी हुई। तब म गुदा स यह दुधा मनाना रूा कि गुदा बरु कि दे कि सोप पठान की दोम्नी का धीर देगें। धाज राजा धर्मरसिंह मरुं गय है धीर बादगाह मे उनकी माग बुर्ज पर रगबा थी है। धेबा गनी म मुभ मागीर का इम धादे बरु में धाव धरुमाया है धीर पर पठान धब धपन को गानी पौर म धानी धरुधरु दना है। मरु मेग इरुजन का धीर इन्सानियन के

तवाजे का सवास है। यह पठान की तमवार उमके दोस्त के लिये है। कौन बहादुर मेरे साथ चलागा ?
 नबीरसूल—घब्राजाजान ! मैं शनी के लिये जान दूंगा।

शाहबाजर्वा—शावास बेटे ! और कौन जवान है !

एक वृद्ध मिपाही—दोस्ती दुनिया में बड़ी चीज है। दोस्ती के लिये जोते सब हैं पर मरने वाले बहुत कम हैं। दोस्त शाहबाज ! मैं भी तुम्हें अपना मर नजर करता हूँ।

शाहबाजर्वा—घाप घसस सैय्यद हैं। इस्मानियत घापकी घाँगों में टपकती है। और कौन बहादुर है !

एक नययुवक—हम बादशाह के मिपाही हैं हमने तुम्हें का नमक खाया है, हम बागी नहीं हो सकते।

शाहबाजर्वा—घमर बादशाह तुम्हारे गले को जमीन करता जब भी तुम चाही ममक हमारी का दम भरत ! हम चाही नीरर अजर है मगर मिपाही का फज घदा करने को। घमर बादशाह ससामत हम पर ऐसा मार डालत है कि हम इस्मानियत के फज को घदा करमा ज्यादा घेटर गमभें तो हम माजिम हो जाना है कि हम नीररो को गुमागो का बामाएताक ग्गें बर्गोंर बादशाहों का बादशाह बह गुलाबन्द बगीम है त्रिने हमें इस्मानियत दो है। इस्मानियत का

पर हाथ रखकर) एँ यह क्या सुन रहा है।
मेहरवान महाराज मारे गये ? (सोगों हाथों से ध-
बन्दकर मेठा है) जिसकी बराबरी का धरदिस जहाँ
पैदा नहीं हुआ। (पुत्र से) देटा मवीरसूल ! धर्म
बन्दोस के सब सोगों को इकट्ठा करो।

नबीरसूल— बहुत प्रच्छा भटवा जान ! (जाता है)

[धीरे-धीरे बहुत से पठान इकट्ठा हो जात हैं।]

राजबागुल्लो—माइयो हमारे सामने एक निहायत पाकीजा सवास
दरपेस है। आप सोगों को मानूस है कि नागीर के
राजा धमरसिंह राठीर मे एक बार मेरी जान
बचाई थी और मुझे पगड़ीबदस भाई बनाया था।
हालाकि मैं नाकीज निपाही था और व राजा धीर
वाही मानसबदार थे। उसी दिन से मैं जुवान दी
थी कि यह जिसम धीर रह आपकी हुई। तब मे
गुदा से यह हुआ मनावा रहा कि गुदा वह दिन से
कि सोग पठान की दोस्ती का बीहर देत। आज
राजा धमरसिंह मारे गये हैं और बादशाह ने
उनकी साग बुज पर रगवा थी है। बेवा रानी ने
मुझ नाकीज को इस घाटे बरु म माद फर्माया है और
यह पठान धम आपन को वाही पात्र ग वागी करार
दता है। यह मेरी इज्जत का धीर इस्तानियत के

यह जुम्म बरगान पर सज्जे हो ?

मर— नहीं कर मत मही कर सज्जे ।

शरपात्र— सब बसो साह का जोहर सिगावें ।

मर मिपादी—बसा गहवाज तुम्हारे दोस्त के मिये हमार गन
बदम हाजिर है ।

[मर मिमकर पळे है]

हम तन-मन वारेंगे हंगे बुर्बान ।

हम तन-मन वारेंगे हंगे बुर्बान ॥

मुमाधिग है एक गह क दुनिया क मय इन्तान ।

बन्दे गुदा ममी है हिन्दू और मुसमान ।

गाब में पसा घरा है जो मन्दिर में मही है ।

मि में रमा मही है तो बहों बुद्ध मही है ।

यह एक ही अल्लाह जा यहाँ है—यहीं सो है ।

उमर नाम पर निमार पर देंगे अपनी जान ।

[मर का प्रत्यन]

घोषा हरय

[म्याद—शौकता मरप—अध्यात पत्र पर मरप
उज्ज्वल पत्रित है । अमरमिह छोड़े पर अमार बंगी मरमार
निचे गइ है]

शाममिह— (मरमार के बी बरक उज्ज्वल पर मे) रागा राटीर भी
जय । यारो अत हमारो बठिन परीभा का दिन है ।
हम गिनती में नरक है शत्रु अगाधारग प्रबन्ध । हम

यह जुन्म बरदान बन सकते हो ?

मह— नहीं कर सकते नहीं कर सकते !

शरदात्र— तब बला, सोहे का जीहर शिवावे ।

मह निपात्री—बसो गहवाय तुम्हारे दास्य के नियम हमाग नन
बदल हाजिर है ।

[सब विमकर ग ते है]

हम तन-भन बारये होंगे वृजान ।

हम तन-भन बारये होंगे वृजान ॥

सुमाफिर हैं एक राह के दुनिया क सब इन्मान ।

यन्दे गुदा सभी हैं हिन्दू धोर मुसलमान ।

कार मैं क्या घरा है जो मन्दिर में नहीं है ।

मि में क्या नहीं है तो बही कृष्ण नहीं है ।

यह एक ही धन्नाह जा मही है—वही तो है ।

जमक नाम पर निस्तार कर दोगे अपनी जान ।

[गय का प्रस्थान]

धोया दृश्य

[स्थान—श्रीमन्महा कर्म—मन्नाह पादाः कर मन्म
यत्रतू मन्मिह है । यत्रमिह मोहे पर मन्म बंसी तन्म
निर गह है]

शाममिह— (नरगार ऊँची करक उष्य रहर में) रागु राटोय की
जय ! वीगे मात्र हमाये बठिन परीगा का मि है ।

य दिन । म नगय है तनु धमापारग प्रथम है । हमें

केवल युद्ध ही नहीं करना है दो अन्य काम करने प्रथम तो महाराज की साफ बुर्ज पर से सानी दूसरे काकीजी को सतो कराना है । यदि हम म कर सके तो हमारा क्षत्रियत्व धिक्कार के हाँ जायगा । भाइयो कहो बीन प्राण देगा ?

महाराजपूत—हम प्राण दोगे और प्राण लेंगे ।

रामसिंह— भाइयो केवल प्राण देने और मन से कुछ नहीं बने हमें बड़ा कठिन और जोशिम का काम करना है

मय— (एक स्वर में) हम वह काम करके ही दम देंगे ।

[रानी का प्रवेश]

रानी— ठाकरा इसका लिए कोई वाचन नहीं है । अब कोई हमारा मौकर नहीं । मैं सबको मौकरी से करती हूँ । जिनकी इच्छा हो पृथक हो जाय । युद्ध करना हो क्षत्रियत्व के नाम पर करे ।

महाराजपूत जय महारानी की । धात्र हम माग्ना लेंगे ।

महाराजपूत—बीरो धात्र आपकी तलवारों का पानी जायगा । राजपूतनी बार-बार पुत्र को जन्म करती । बीर पुत्रों को युद्ध में प्राण-त्यागना ही उचित है ।
धपके स्वामी

राठी

संघात पीड़ियों तक गावों में ।

एनी— (घाते बड़कर) ठाकरां आपकी वीरता बुनियां म जाहिर है पर घात आपको उससे भी अधिक वीर बनना पड़ेगा । घात आपकी वीरता की पराकाष्ठा करनी होगी क्योंकि आप कुस दो सौ हैं ।

एक राजपूत—माता, आप बिना न करें हम वीर हथार के धराबर हैं । हम तिल तिल कटकर भी महाराज का शरीर साकर आपकी सेवा में हाजिर करेंगे ।

अमरसिंह— (नम्रवार ऊँची करक) सरदारो जब तक महाराज का शरीर मौमहसे नहीं पहुँच जायगा सब तक न हम मरने न हटेंगे ।

मथ— महाराज अमरसिंह की जय हम अमर हैं हम बाल से भी नहीं डरते ।

[एक सैनिक का प्रवेश]

सैनिक— (नम्राम करते) मुजरा कुँवर साहब । कुछ राजपूत श्रीमानों की सेवा में उपस्थित हुआ चाहते हैं ।

अमरसिंह— उन्हें घाने दो । (राजपूतों का प्रवेश)

अमरसिंह— भाइयो घान सांग कौन हैं और क्या चाहते हैं ?

राजपूत— महाराज हम घाते में रहन बाने शाही सिपाही हैं । हमें मानूम हुआ है वीरपर अमरसिंह नाम घाने है और सौ माता का परमान हो रहा है । महाराज,

दूमरा— यही सा उनका देवतापन है। वे हम जैसे घोड़े ही हैं कि रात दिन नोन-तेस-सबड़ी में घिर लपकाते रहें।

पदमा— खुप हम साधु-महारमा व्यहरे हमें नोन-तेस से क्या बास्ता ?

दूमरा— सब कहते हो महारमाजी मेन संमारी जमों पी बात कही थी।

[एक मन्त्र का प्रयोग]

मन्त्र— जयगकर !

साधु— जयगकर !

मन्त्र— (बगवन् करके बैठकर) महाराज मन्डमी का कहीं म पधारना हुमा ?

साधु— याबा उत्तगण्ड म अपने घा रहे हैं। अमरनाथ महा राज के दर्शन करके घाये हैं। अब सीध विध्यापन के पार आयेंगे।

मन्त्र— अम्य महाराज दर्शनों से पवित्र हा गया।

[दुनये मन्त्र का प्रयोग]

पदमा मन्त्र— मन्त्री अन्धी महामाघों क दर्शन करमा ! रमत राम है उत्तगण्ड मे घा रह हैं।

मन्त्र— (बगवन् करके) जयगकर को !

साधु— जयगकर की। कौन रूप हा भाई ?

मन्त्र— महाराज मैं मोदी हूँ।

साधु— क्या यही के निपाणी हो ?

मच्छ— हाँ महाराज, यही पीड़ियाँ गुजर गईं ।

भायु— (इधरे से) बच्चा तुम कौन हा ?

मच्छ— महाराज मैं नाई हूँ । हजामत बताता हूँ ।

भायु— तुम तो बड़े-बड़े रईसा के यहाँ जाते होगे ?

मच्छ— हाँ महाराज, आपकी दया से बड़े-बड़े सरदार मुझसे हजामत बमबात हैं ।

[सीत-नार मछों का प्रवेश]

नब मच्छ— जयदाँवर की !

भायु— जयदाँवर की !

[नब बैठकर गप्पें मड़ते हैं]

एक— धाजी बिसम गरम करो, सस्तों को दम लगवाओ ।
समे दम भिटे गम । (धांगता है)

दूसरा— (मुसय्य निजामकर) यहाँ हमेशा साप रखते हैं (भायु से) महात्माजी बिसम है ?

भायु— यच्चा, धाज कृष्णपन्नायण का बत है धोर गुन्जी मोम हैं । धाज धन्न-जस मगा-याभी मही होगा ।

[मभी ध्याज के मुसा धायु को देगते हैं]

एक— सादान् दिय के धकतार हैं कँया तेज है ?

दूसरा— भायु तो अधिक्त मही प्रतीत होती ।

तीसरा— महात्माओं को क्या, हजार वष के हा जाँय तब भी ब्राह्मक बने रहें । (भायु से) महाराज गुन्जी की धायु क्या है ?

माधु— घान्त रहो मुग्धी को कल्याण उदय हुई है (उठकर मुग्धी के समीप जाकर) वे योगदृष्टि से सब देख रहे हैं। (बुद्ध सबेठ करना है और सीटना है।)

माधु— गुरुजी न भ्रात्रा द वी।

मध— जय गुरु जयशकर।

माधु— सुगो (जय न ताबीज निजाम कर) यह ताबीज गज कुमारी के हाथ पहुँचाना होमा।

अमरमिह— मैं पहुँचाऊँगा।

माधु— आपसे सेना होगी।

अमरमिह— मैं धम और परमेश्वर की गणप सता हूँ।

माधु— यदि ताबीज पहर रात जाने से प्रथम ही कुमारी के हाथ में न पहुँचा, तो से जाने वाले का नाश हो जायगा।

अमरमिह— यह मूय दियते ही पहुँच जायगा।

माधु— (ताबीज देखकर) तुम कौन दाम्नी हो ?

अमरमिह— मैं गीबी हूँ

माधु— कहां रहते हो ?

अमरमिह— गौमहमे ही में।

माधु— तुम्हें एक काम और करना होगा, ताबीज कुमारी को देकर यहाँ आना होगा।

अमरमिह— उभी समय।

माधु— उगी समय।

- जयमिह— (मोक्षर) घाऊंगा ।
- साधु— (नार्द मे) तुम्हारा क्या नाम है ?
- नार्द— महाराज, मुझे पन्त कहते हैं ।
- साधु— साधु की सेवा करोगे ?
- नार्द— (हाथ जोड़ कर) अवश्य महाराज ।
- साधु— गुद महाराज रात्रि का साधना करते हैं । तुम यहाँ उपस्थित रहा निहाल हो जायाम ।
- नार्द— (प्रणम होकर) जो आज्ञा महाराज ।
- साधु— धरुधा धव सय सोग जाय । गुरुजी की साधना म विष्णु पढ़ता है । जयसि तुम फिर रात्रि जाने से प्रथम ही घाना घोर घन्दन तुम भी ।
- दानो— जो आज्ञा (मद पाठ है) ।
- सुबक तपस्वो— (घोर तोल कर) विजयमिह, मात्र कछिन परीणा है, हम केवल घाठ हैं ।
- गाधु— पिन्ता नहीं कुमार, हम घाठ हवार हैं । यह सोहा में रि दुनिया दया ।
- सुबक— हमें अपनी पिन्ता नहो, परन्तु कुमारी की रक्षा करनी है ।
- साधु— सब भी एकत्रिय म्हाय करोगे । (गायन एकर) वह देगिय अतमिह मा रहे हैं ।
[गाधु व बेठ व जंजण का प्रवन्]
- लैतमिह— (सीधा कुमार के पास जाकर) महाराज कुमार का जय

हा सेवन मौमहमे से घा रहा है ।

कुमार— वहाँ का क्या हाल है ?

जैतमिह— महाराज पाहु की नदी बह रहा है ।

कुमार— क्या गमी से भट हुई ?

जैतमिह— नहीं महाराज बरगुण-डी की भाँति पुट के प्रत्येक स्थान पर बिजली-सी जलनी बौर पड़ती है । राज कुमारी भी गमी तसवार सिमे परछाई की भाँति उनके साथ है ।

कुमार— विजय चाहे जो हो हम अभी बसमा होगा ।

बिजय— महाराज रात्रि ही बने बसला ठीक होया ।

कुमार— रात्रि तक यन्त्र प्रसय हो गई ?

बिजय— हम बसकर यदि कुछ न कर गये तब गयकुछ भट हो जायता ।

कुमार— (बड़ गिर की भाँति) क्या हमारे भुजद-ट इतने निवस है ?

बिजय— (राज जोड़कर) गृहीनाथ मगुप्य का यम सुद्धि है । (जैतमिह ने) क्या नीमहून से बार्दे पूरण मता मती है ?

जैतमिह— राममिह निने क पत्रक पर पृष्ठ रह है । यहाँ भाग के निम गधाय हा रहा है ।

कुमार— यहाँ बीज गया है ?

जेतमिह— धनराजा वही जीवनमिह मये हैं (नामन दगकर)
व घा रहे हैं।

[मापुवन में जीवन का प्रवेश]

जीवनमिह—(धोंगा में धाँसु का कर) महाराज कुमार हमारा
यही निरुपाय बँठे रहना सज्जा का योग्य है। वे
मुट्टीभर राजपूत यामक गममिह की अधीनता में
प्राणा पर गल रह हैं। वे पुर्ज स सात सात पर
सुल हैं। व धनपूर्वक अगम्य धीर असाह साही पौत्र
को भीरत हुए भीतर धर्म बल जा रहे हैं।

कुँवर— धीरो इस ध्यानवेग को त्यागा। वनो समय रहते
बृद्ध कर पुर्जें।

बिजय— महाराजकुमार हम बचन राजकुमारी की रक्षा कर
सकते हैं। हमें मूर्ख दिग्गने तक टहरना पड़ेगा। (दुष्
गाभार) एक मुक्ति है।

[धीरे-धीरे परामर्श करने है। सबकी गहमनि हाथी है।
बिजयमिह बुग्यात उदकर बन देते हैं।]

छटा हरय

[रत्ना—घावरे का निमा समय—अनरथाद बिज के
पाठ पर अममिह सन्निहो वहीन नदी तमचार निरे सारे
है। बुद्धिनी पर तात बड़ी है। दरबारा बर है। अमत्य
मुग्ना की देना पमीतो वर मोर बमन बधे निरे सारी है]

राममिह— मे बरगा है दरयाजा सोस दा धोर मुझे महाराज

अमरसिंह का शरीर ल आन दो ।

मुगल सरदार—बाबदाह सलामत का हुकम मही है ।

रामसिंह—मुझे इसकी परवाह नहीं । मैं फरक ताक दूँगा और
जयन्दस्ती अपनी इच्छा पूर्ण करूँगा ।

मुगल सरदार—अगर तुम तुरन्त मही से न हट जाओगे तो मैं
अभी तापा पर बत्ती रखने का हुकम दूँगा । तुम
बल्लसीब ममरूर बाकिर, गहूँ क साथ पुन की तरह
पिस मरोग ।

रामसिंह—(गनिबा के) वीरो घोसा जय मती की ।

मय राजपूत—(तनवार मून कर) जय सती माता की ।

रामसिंह—फाटक को जला दो और घाटमो पर घादमी सवार
हारर बुझ पर चढ़ जाओ ।

[एक दम गमग राजपूत हमसा घोष देने है । कथ फाटक
म भाव ममाने है]

मुगल सरदार—बहादुरा देरते क्या हो तागों पर बत्ती दाग दा
और सीरों की बाजिन धुर कर दा ।

[ममग ममम दम दूर पटना है । बनबीर बुद्ध का गमा
कथ जाता है । राजपूत रिजे पर चढ़ने का उद्योग करने
है । फाटा घोष घोष करने ममाने है]

रामसिंह—शायाग सींग मार जाओ वर अमर ममाना है । राठोर
की सतवार का गोशा पाना मनुषा का ममा ममाना

दि याद रहे । मारे जायो ! बीगे मारे जायो । बाहू
जातिभसिह बया बरन है । तुम्हारे तीर धमूर है ।
जयमिह ठावुर तुम्हारे घामे मोर्षी पा पहाड नग
गया है । तुम्हारी माता धन्य है । मारे जायो योगी
यह पव विर बाह-बाह न मिनगा । घागे की हम
गुलाम धरता में तुम्हारी बीरता की अमर छाण गू
आयेगी । यागे न मुगल रह्य न हम तेयस हमाग
यग रह जायमा ।

[गूब बीर न नलबाह सुमाता है]

जयमिह— (बर्दा बरबर) पिस पयो गकरा बर्दा हमारे स्वामी
की माग बीर-बीरे या रह है । जय महागज अमर
मिह की ! [लखन बाग बर दूर पवन है । पाहन दूद
जाता है । मर सोग दिने य भीतर हम बात है । तीर न
धन्वुबी देता मति मेन-येन मराने ?]

धन्वुबी— धन्य महागज गाममिहकी सबक ना मुजग बरुम
हा । बिना न बीरजिय । धन्वु जय नर है नय नर
घाप बष्ट म परे । म अभी स्वामी की माग जाता है ।
[लखन बाग बर्दा की भाति मुदन हम बा बीर जयता
है । बीर धन्वुबी की गजग न परगार न गन्य हम बर्दा
बर माता है ।]

गाममिह— (घाव बरन हू) बाघाजा तुम्हारे । मेने भी मरमा
या घावन हम मागा बा सुमा दिया ।

बन्सुड़ी—(राममिह की के लिए रास्ता बना हुए) महाराज, मैं आपके घराने का जाकर हूँ। स्वर्गीय महाराज ने मेरा अपमान किया था। अब महाराज ही अपमान न सहकर झुक मरे तो महाराज का यह सेवक कैसे अपमान सहता। (तबबार पुमाने है) बड़िया महाराज, बड़ो भाइयो वह सामने महाराज का रास्ते है।

राममिह—(सामने के सम्बन्ध का बीरने हुए) पापाजी क्या मैं सुन सकता हूँ कि बाकाजी ने आपका क्या अपमान किया था ?

बन्सुड़ी— महाराज उन्हें मेरे पामन का बड़ा शौक था। सरदारों को वे मेरे घराने भेजा करते थे। एक दिन मुझे भी हुकम दिया। भला मैं मेरे घराना क्या जानूँ? वे बह सेवान कर सवा। महाराज ने मेरी पाजीविका छीन ली और मुझे मुगलों की नौकरी करनी पड़ी।
[एक नई बुकन सवा पापा भारती है]

बन्सुड़ी— (बाँनों ने राम धोच दोनी हाथों ने तपबार पुमाने हुए) महाराज आप ठीक मेरे पीछे बड़े पसे घाड़ए। जम कर सुद्ध करने का समय यह नहीं है। हमें उग सुर्जी तर पहुँचना है। (बाजा है)

राममिह—(पीछे जानकर) पापाजी पाकीजी ने हम नाम के लिए मैं आपका शमा मंगना हूँ।

[एक बुकन को बाट बीरना है]

बन्वूत्री— महाराज, उनके स्थान पर सब घाय हमारे राजा हैं
 और मैं घायका सबक । यह घाय क्या पाह्य है ।
 माधवान ! (बहुत ही मुक्त मंता सोना बीरो पर टूट
 पडती है । बहुत और मकता है । स्वामक पुट होता है ।)

एक मुगल सनापति—यही सोना कागी मग्दार है । इह जिन्दा
 गिरफ्तार करो नहीं तो मार डालो ।

बन्वूत्री— (हंसकर) जिन्दा ही गिरफ्तार करो । लो (उद्धर कर
 नकारि का गिर का मता है । मुक्त मता में भयदक मक
 जाती है ।)

राममिह— (माये का एक पीछर) सान्नात्री सब हम एकत्र
 थावा सोमना साङ्गि ।

बन्वूत्री— बडे पता बड बता ! (नर राजपुत काग सोम स्ने है ।
 बरा और मकता है ।)

बन्वूत्री— क्या घघिर घाय लगा ?

राममिह— मगी भुट मगी बह गामन बुर्ज है ।

बन्वूत्री— (सं मे) बागे बह बुज है उम दगम कर सो ।

मक राजपुत—महाराज की जय राटोरो की जय ।

[बुर्ज को पर मंग है]

राममिह— भाँगे देगन क्या हा घायमी पर घायमी सत
 जाया । (बाँडे उकर कर, उद्धर कर बुज का बदन मदन
 है । यह राजपुत एक दर एक कर कर बुडी कर बहिन मक)

है। मय्य मेना तीरों की बर्षा करती है।)

बम्बू जी—(बिम्बा कर) जय महागज रगावका अमरसिंह की।
 यह मैं बम्बूजी आनबत दाही हुकम पर सात मार कर
 अपने स्वामी की से आ रहा हूँ जिसकी माँ ने घोसा
 गायी है राते। (सात को उठा कर पयही से मूष बमकर
 पीठ ने बाँध बैठा है। मय्य मेना बुर्ज पर टूट पडती है।
 पमानान मुद मय जाता है। मोर्षी का डेर लव जाता है।)

बम्बू जी—(बाएँ बाएँ लमवार बमाना हुआ) महागज घामे बड़
 कर राप्ता कीजिए।

रामसिंह—बसिण आयाजी (घामे बडकर लमवार के बम से पशु
 को पीर कर राप्ता बनाता है।)

मय गजपूत (मयापय की गाग को देगकर) महागज की जय हो,
 गतीग की जय हो (ओन्न म घातर एकरम मार बाट
 मया से है। मयम मता के गाँव उगव जात है।)

रामसिंह—बड़े बसिण आयाजी घमी फल्लव दूर है। देगिये
 यह पात्रक पर म मना घा रही है।

बम्बू जी—(मोदतर मबार मोतर) कृष्ण सिगा मही। घाप
 घत्र घा का बाटते हुए घाम यद जाणा।

[मय नाम घामे बड़ने है]

[मय्य मता उर भारी घोर म डेर मति है]

रामसिंह—(दुर्गा लमवार बमाने हुए) आयाजी पाटक गार
 बनना बग्न बन्नि है।

बस्त्रुजी— (दर में) वड़े बसो राजपूतो धात्र तुम्हारी माता के दूध की परीक्षा हागी । (मर सोप धिन्नाने है—'जय घटीर बोर की । जय लती माता की ।')

(गाटक पर भयातक मादकाट भयलो है)

बस्त्रुजी— (धर्मव्य पाबा में सिधिल होकर) महाराज ! माबधान होकर मुद कीजिए । घाट मरे मुजबड सिधिल हो रहे हैं । माबधान ।

(मूब जोर से तपवार बनाने है । मूमम रक डरते डेरकेला है घबारा पीर में बहन-मी बने मेला घाटर मूबन मेला की बीरलो हई बस्त्रुजी के सामन धा पहुँचना है ।)

बस्त्रुजी— माबधान जो कोई घाम बडेगा वा दुबडे कर दूंगा । रास्ता छोड वा ब्यथ प्राण न लो ।

[गाट न मबान घाटबाजगी का प्रवेश]

राजबाजगी—(तनवार घुमार) पुत्र राममिह धीर मरणा बस्त्रुजी में दाहबाजगी पटान मगराज का दोस्त धीर गान्धि है । मरे माब पांन गी बहादुर पगन हैं जो ह्यना नही जानन । घबहाना नही गोये बडे बनो ।

बस्त्रुजी— धय पगन धीर गुमन मिदना की मात्र गगनी । मुगुम मना नायक—गुम दोगन हा । मुगुममान हाकर बाकिर की उगन मे मड़ने हा ?

राजबाजगी—गुम बमीन हा जो गगान को ह्यगान न नही मिदन दन । द्यर घासी । (नर हरे हाप में मुगुमा

दिर सड़ा देता है)

बस्तूजी— (बापों से विचित्र होकर) महाराज रामसिंह !

रामसिंह— (सीढ़ीकर) चाचाजी क्या हुआ है ?

बस्तूजी— दाहयात्रायाँ पठान बीर इधर घायो ।

दाहयात्रायाँ—(निकट घाकर) क्या हुआ है सरदार ?

बस्तूजी— यह साया सीं गृहगणार विवा महागामी क दूमरा इमे न छून पावे । तुम्हें रक कर युद्ध करने की भाव द्यवन्ता नहीं सीधे सीमहम की राह सी । मैं गाही पौत्र का रास्ता रोहता हूँ । निमय जाघो । राम्मे म भय नहीं है ।

दाहयात्रायाँ—बहुत घबड़ा सरदार (घाय को घानी पीठ पर बम कर बापता है)

बस्तूजी— महाराज !

रामसिंह— चाचाजी !

बस्तूजी— घाय विरंजीव ग्हे मैं बर्ताय्य पूरा कर चुता । महाराजी स बहना वि वे मुझे दामा बरें । दाहयात्रायाँ को पीठ पर रहिये । उर्पोरी साग गिता पर वहुष जाय तोर गगवा दना । बाम सिद्ध हो गया । जाहा मैं नृणय मना को भोरता हूँ । घाय बडिग ।

रामसिंह जुटार चाचाजी ।

बस्तूजी— (घायो के घायु भग्नर) जाघा मरे महाराज तुम विरंजीव ग्या ।

[राममिह का छोड़ी मैना सहित प्रस्थान । बम्बूकी का घटक पर इट कर मुड़ करना]

मातर्घाँ हृदय

राम—बीबहना । गणप—रुद्रि पत्रबोर मुड़ । तीमहने को मुयक मेना ने भेर रगा है । रुनी मंगी तनवार मिण तबेच विजयो की भोगि धूम रही है । ताण एक चरोने म सीर-बर्पा कर रही है]

रानी— (ताण मे) धन्य मंगी तरे बाण ता यम क सन्देह है ।

ताण— माँ घाप इस धोर की बिन्ता न करें घाप वाम पाण्व की गहा करें । वही चकेनी मालती सैनियो पर तेम उसीध रही है । उपर कामाहम बड़ रूठा है ।

रानी— बिन्ता नहीं पुत्री मेने बहाँ बुद्ध सैनिक भेज मिण हैं ।
[मंगी तनवार मिण बम्बूकी की बो को का प्रवेश]

रानी— (नाजक मुँह मे) घाप कौम है दवी ?

बद स्त्री— एक राजपुत्र थी जा घापक मिण घात्र घाण दना धाटनी है ।

[अपसर रुमी के पंगे पर रण देती है]

रानी— धन्य योगदाना, पम्बु मे बिना परिषद गाये घापना मबा मही म्यारार कर मवनी ।

बद स्त्री— मैं घापन पुरान पावर बम्बूका की पंगी है ।

- रानी— खम्बूजी ने मेरी प्रार्थना अस्वीकार कर दी थी, क्यों ?
- बह— महारानी ब किसे मैं गहरी मार-मार रहे हूँ। वे कुछ ही घड़ी में महाराज का शरीर यहाँ लज्ज धारहे हूँ।
- रानी— (तसवार घाँसों के लया घोर उमे देखर) मैंने कुछ घोर ही गुना था। मैं अपने विषागों को धिक्कारती हूँ। घायो घटित हम राजपूतनी का कठिन कर्मव्य पूरा करें।
- बह— महारानी मुझे धन लज्ज लारा की रक्षा का मार गौना जाये।
- रानी— (घाँस पर कर) लारा घायकी पुत्री है। घाय यहीं टहरे।
[एक राजपूत का प्रवेश]
- राजपूत— महारानी की जय हो ठाकुर विक्रमसिंह नाम घाय मिहदार की घब कोन रगा परेगा ?
- रानी— (एक मंत्रिक से) घादू मगिहू घाय मिहदार की रक्षा कीजिए।
- शाहसिंह—(मुद्रण करके) ओ घाय्या महारानी ! [प्रस्थान]
[लज्ज म काँस कोलाय। घायियों का हृदय। बई छत्र पूरा का प्रवेश]
- राजपूत— महारानी की जय हो। अमरस्य मुगलमना घोर घायनी है।
- दुग्गल— ब गायिदी रगा रह है।

सीमरा— उनक माथ हजाराँ मगालें हैं । वे इम महल को
फूँककर गाय पर दग ।

[एक राजपूत का प्रवेश]

राजपूत— महारानी पूर्वी द्वार भंग हो गया । तमुदन वग स
भानर घुमा चला भा रहा है ।

रानी— (दर्द से) ऐसा कभी न हान पावगा राजमिह !

राजमिह— जय माता की ।

रानी— घाय पूर्वो द्वार का मोर्चा ल ।

राजमिह— जा भाजा । [प्रस्थान]

[अपानक कोताप बड़ रहा है । एक तीर रानी की कुआ
स साकर लगता है]

नाहरमिह—माता, घाय युगा बर भानर रहें ।

रानी— (तीर को मोच निराम कर) बुद्ध पम्वाह मही ।
टाकराँ घाय पच्छिम द्वार पर गहायना बरे ।

नाहरमिह—जा भाजा ।

[राजपूत का प्रस्थान]

[रानी के सपाथ बट्ट के पठान मंत्रियों के साथ साहाय्य
का प्रवेश]

रानी— गदरदार रहा । एक बन्म भी घाय न बड़ी ।

[गनवार मंजर लेनी के घाय बड़ी है]

सादसाजगी—(गनवार फेंक कर कुने टें कर) जय महारानी का ।
मै सादसाजगी पठान हूँ । माताका घायर घोर सादसाज

रानी— बल्लूजी न मेरी प्रायना घस्वीबार मर दी थी क्यों ?

बद— महारानी वे किस म गहरी मार-मार रहे हैं। वे कुछ ही घड़ी में महाराज का दरिज यहाँ मकर धारहे हैं।

रानी— (मकर धारों से मया घोर उमे देखर) मैंने कुछ घोर ही गुना था। मैं घपन बिषारों को भिक्वार्ती हूँ। धामो यहिन हम राजपूतनी का कटिन वस व्य पूरा करें।

बद— महारानी मुझे घन्न गब मारा की रक्षा का भार सौया जाय।

रानी— (घ मू मर कर) मारा घापकी पृथी है। घाप यहीं टरने।

[एक राजपूत का प्रवेश]

राजपूत— महारानी की जय हो ठाकुर विष्णुमिह बाम घाप मिहृदार की घब कीन रक्षा करगा ?

रानी— (एक मनिष से) ठाकुर समिह घाप मिहृदार की रक्षा कीजिए।

ठाकुर समिह—(पुत्ररा करके) जो घाला महारानी ! [प्रस्थान]
[संख्य से काली कासाण। मनिषा का टार। कई टार पूता का प्रवेश]

राजपूत— महारानी की जय हो। घमम्य मुगमममा घोर घा गरी है।

धूमरा— य मनिषी गणा रर है।

तीमरा— उनके साथ हजारों मंगलों हैं। वे हम महम का पूरुषर साथ कर दग।

[एक राजपूत का प्रवेश]

राजपूत— महागनी पूर्वी द्वार भग हो गया। वनपुत्रम वग म भोतर घुगा घला घा रहा है।

रानी— (हर्ष में) तेमा कभी न हान पावगा राजमिह।

राजमिह— जय माता की।

रानी— साथ पूर्वी द्वार का मार्ग म।

धर्ममिह— ओ भाजा। [प्रस्थान]

[भयानक कोलाहल बढ़ रहा है। एक तीर रानी की कुजा घ घाकर मगता है]

नादरमिह—माता घाग कृपा कर भोतर रह।

रानी— (तीर से तीब दिगम कर) कृप पम्बाह मही। टाकरा घाग पश्चिम द्वार पर गहायता करे।

नादरमिह—आ भाजा।

[राजपूत का प्रस्थान]

[रानी के अचानक बढ़ते पड़ने में निरर्थक का घाघ घराजगी का प्रवेश]

रानी— सुखमगर रहा। एक कर्म भी घाम न यड़ा।

[तनसार सेकर केरी न घाय बड़ता है]

राजवाङ्मयी—(तनसार सेकर कट, कुने टैर कर) जय महागनी की। मैं राटवाङ्मयी पदान हूँ। घागकर घाकर मीर मट्टाङ्ग

का दोष्य । मैं घपने गर्बसि महाराज की लाय स
घाया हूँ । घघ मुझे क्या हुबम है । पूर्वो दग्बाजे पर
मरे बेते नबीरसूय का बग्जा है ।

रानी— घन्य पठाम बीर मुझे इस विपत्ति में माज छोडकर
घाप से बोधना पडा है । परन्तु

[उषमिह का रण में मरण्य प्रथम]

गममिह— माता हम महाराज को स घ्राए हैं । (रोना है)

रानी— (तत्रवार पञ्चर) येते घघ युद्ध मे मुझे छुट्टी मिसनी
घाहिये । मेरा सब संयागिर्मा बग दो ।

राधमिह— जैसे माता की घाजा ।

बस्त्रुत्री की रानी— गुत्र मरे स्वामी ने बगा युद्ध रिया ?

गममिह— रानाजी बे ही मगराज का दरीर माण हैं । उनरा
दगीर रनी गती छिण गया है परन्तु उनका प्रण
है कि जय तक बिना में घाग रगावर ताप न
छूटेगी बे प्राणु न स्वामने ।

रानी— (घागद रित्रीर होकर) मैं घय हुई ।

[घागू गिरानी है]

गरबात्रुगी— महाराजी घघ मुझे भी मडा न छुट्टी मत्रिय
मे घपने मेरुबान दोष्य न पाग जाता है ।

[दिर कर कर जाता है]

रानी— धर्य बीर ! रामसिंह पुत्र ! अभी बागूठ गाँवों का पट्टा पहनाकरगी पठान और उमकी घाम घीयाद को बगल ।

रामसिंह— ओ घाजा बाबीजी !

[एक रात्रूत का प्रवेश]

रात्रूपूत— महाराज के महल में घाग सगान की बरदा कर रहे हैं ।

रामसिंह— माता मापपी मय गामघो प्रस्तुत है ।

रानी— मासती !

[मासती का राते गेने प्रवेश]

रानी— मासती, सब प्रस्तुत है न ?

मासती— हाँ माता !

रानी— पुत्र महाराज का दाव बहाई है उम वही मंगामा ।

रामसिंह— (मन्दूर कर कर) ओ घाजा बाबीजी !

[रामसिंह के मरोर से कृप गंविज अमरसिंह का गरौर ले घा है ।]

रानी— (बाघ को देखकर) घामो स्यामिन् बस तब तुम बंभे घे घात्र बभे हो गय । बजा बीगो की मही भाग्यरगा है ? (घोद ब मेघर पिर को बधम्याज रग कर दामिनी मे स्यात्रन मत्वा कर स्नात बरछा है । का बभ पटना कर घाकी करती है)

[एक मर मगिरी मतिन गान है]

जय जय राजपूत कुस भानु ।

जिनके प्रबल प्रताप महीतस भारी ।

जिनके भुजबल अमित धरि समू हारी ।

जिनके अरुण धमक स अरिणा भारी ।

वे गठीर मिह' यों अमर हुए अविधारी ।

[कोनाहल बड़ खा है]

[एक अज्ञात का प्रवेश]

राजपूत— जय महाराजो ! शत्रु-सना न सिंहार अहू ।

दिया । शत्रु भीतर घुस रहे हैं ।

राजो— टांगी अब कोई समाचार मुझे न पहुँचाओ । प्र

रहते महल की रक्षा करो । इस समय मेरी सा

अहू न करो । (दासियों के) सवियों मेरा अहू

साओ मित्र लाओ साओ पुनरी साओ, साओ

साओ हाथी-गि का अहू साओ । आज मैं अहू

करूगी । (दासिया रोने लगी सब नामकी लगी हैं । र

अहू करती है ।)

सारा— (बहुत-आज पेंच कर) माँ मैं भी साथ के साथ

अहूगी । मुझे क्यागिय मही ।

राजो— (घानू बहार) मही बेनी कृ अहू अब-अ अबों

के निरस्य अबोंगे क्या पुण हार गुना है ?

एक दासो—ओ हा मगरना बरी आर दासिया मही साथ

अब अहू दे रही है ।

[वपुष में 'माये-माये' का गोर]

रानी— पुत्र ! दाबू महसू म घुस घाम है ! मायवी ! तुम सब जियों को मगर घयनागार म एकत्र हो जाओ और मसाल सीमार रग्यो । बहिनो यह कठिन ब्यबस्था करना ही पड़ी । (घोर निष्ट धाता है)

राममिह— (तनवार निजाम कर) बाकीजी, घामू मिर पर घा पहुँचे ।

[बहूत-सी तसबारी का घनभनाहट]

रानी— टहरो पुत्र अभी क्षणभंग तुम मुझ से बिगठ रहो मेर माब घामो ।

ताय— (हड करके) मैं भी घसी माठा !

[नैरप्य में 'मारा माये मारी । कुछ बगन नैनिज काज में घुम घाने है । राममिह तनवार मेकर घानठा है । यकी तनवार से सेती है । ताय बनुव उठाकर बागुमघान करती है । बमामान घुड होता है ।]

एक मुगल सैनिक—यही अमरमिह का लड़की है । रग जिना पर दू मा ।

राममिह— टहर पतिन मिहनो को मोन्द नहीं छु सजना ।

[ताय का लोम बाग उम मुसल के हक को पार कर आता है । बन् बिम्बानर मिरता है ।]

[अनेक मुसल-नैनिज ताय पर भान्त है ।]

रानी— (ताय के घाद घाह करत) पारियो, एक बरम बड़ादा

घोर प्राण गया ।

यवन सैनिक—पकड़ सो दोनो को स बसो !

[साहजादा दाघ का नमी तलवार लिए प्रवेश]

दाघ— सिपाहियो ठहरो ! (उनी छ) सड़ाई फिजूल है ।
घायब सब सिपाही मारे गए । तारा को मेरे हवास
कीजिए । मैं वादा करता हूँ कि उसे हिन्दुस्तान की
मस्का बनाऊँगा । आप गुप्ती से सती हुईजिये । मैं
सड़ाई बन्द करने का हुजूम देता हूँ ।

उनी— (रोकर घाने बड़कर) तुम याददाह के बेटे हो
इतनी बड़ी मुस्तनत के होनहार वाददाह हा और
एक मुनीबतजदा अमहाय घोरत के सामने तुम्हें
एमा अयम प्रस्ताव करते धर्म नहीं घाती ! मैं तुम्हें
थाप देनी हूँ कि तुम अभी याददाह म होगे । तुम्हारा
नाश हो जायगा ।

दाघ— (घाने बड़कर) टहरो मैं दम पतित साहजादे को
थाप देने की आशयचना नहीं (तलवार निशान कर)
तलवार सा घोर देगा कि राजपूत कन्या पर कुदृष्टि
दासने का बीमा भयानक परिणाम होता है ।

दाघ— (पीते हँकर) एक घोरत मे खाना मेरा काम नहीं ।
सिपाहियो गिरफ्तार कर मा !

हुं कर राजागज का सार्विको करेन तलवारें निवे हुए प्रवेश]

अमरमिह— अदरगत वाददाह याद तुम घोरता मे नहीं सड़ग

मगर मर्दों से तो सटने में हज नहीं ? सा ठसवार
निकासो ।

बाप— तुम बीन हो ?

राजसिंह— मैं पिछोड़ का राजकुमार राजसिंह हूँ, ठसवार
निकासो !

रानी— राजकुमार बी जय ! सीसोदिया बरा बी जय ! !

राजसिंह— (बरण छूट) महारानी इससे प्रथम प्राना मेरे लिए
प्रसन्नमव था । (बाप से) दाहजादा क्या सोच रहे
हो ? ठसवार निकासो ।

पारा— तुम से मेरी कोई सबाई नहीं ।

राजसिंह— (नाउ बारकर) ठसवार निकास, मपराधी ! पतिन !
पर-क्रियों पर कृदृष्टि दासने बासे !

पारा— (ठनवार मू ठरर) सिपाहियों, एक साथ हमसा करलो ।
[घर मुक्क निगाही एरदम हमसा करले हैं]

रानी— टहरो कुँवर ! पुन रामसिंह, राजुमा को तुम रोरो ।
कुँवर तुम दपर प्राधा ।

[राजसिंह नगी ठसवार भिये रानी के पाल कारर राइ
होते हैं । बी राजुम उनर अप्पन बपल गडे होते हैं बापें
तरर ठसवारें बन रही हैं]

रानी— (बाप से) बन्ने, दपर प्राधो !

[बाप कारर नीब निर लिए गयी होयें हैं]

रानी— (दोनों का गट-झोड़ा बाँधकर) भगवान, तुम्हें मुगी रखें। घाबराव तुम पति-वसि हो। कुमार भय तुम्हें या काम बनन हैं। एक मुझे सती कराओ दूमरे तारा को मुग्धित स आओ। नी-महल का समस्त राजाना मैंने मुग्धार दहेज स दिया।

राजमिह— जो घाणा माता अब मुझे घाणा दो! राममिह भकेस सट रह हैं।

रानी— आया वीर! पर द्वार की तब तक रक्षा करना, जब तक अग्नि घतन्य स हो जाय।

राजमिह— घाव निर्भय रहें।

[मिह की भाँति पवनरस पर दूट पड़न हैं। बनघोर मुड होगा है। रानी भीतर बधा में बनी जाती है। ताप बुद्धि होकर गिर पड़ना है। एक क्षमी सजानगी है। बड़े जोर का पनका हाकर मृत्यु का एक वार्ष उड़ जाता है।]

राजमिह— (ताप क माह पर लतवार रणार) अब क्या दूगदा है?

राज— जान बग्ग ना कुँवर!

राजमिह— अभी सागी मेता को मौ-मान्य स बू प बनन या दूगम ना।

राज— (ताप देकर) फौरन जा रही है सदाँ व-हा गर्द। घय जान ना।

राजमिह— नहीं परवारा गिगा नाहि नौमन्ग व घाण्मी घगबाव

सहित मही मसामन प्राग्ने की सरहू को पार कर
सकें ।

दारा— सिर देता हूँ । (निराशा है)

राजमिह— शाहूबादा घापके बालिद ने तब धार मेरे पिता की
धरण ली थी । घापको मामूम है ।

दारा— मामूम है कुँवर ! मैं घापको दोस्ती चाहता हूँ ।
दिस का दाग साफ़ कीजिए ।

राजमिह— (ताप की धोर नकेन करके) इस देवी से दामा माँगिए ।

दारा— (गिर मुकामर) बहिन मुझे माफ़ करे ।

[ताप कुछ न बदल कर नीच नजर कर गयी है]

दारा— कुँवर, गुदा न चाहा तो हमारी-मुम्हारी दाम्नी
ताजिन्गी रह्यो ।

राजमिह— यह दोनों राज्यों के लिए घातक की घात होगी ।
अब घाप जा मरते हैं ।

[दाप का प्रस्थान]

[राजमिह दारा को उगार कर हृदय में मग्न होता है ।]

परिशिष्ट

कठिन गुण के घय

अन्नदाता—अन्न देते वाता । यह बहु घण है जिसे राजपूताने
 म राजाओं कीर थीमाना को सादर संबोधन करने
 में प्रयोग करते हैं ।

अमीन— एक दाही अधिकारी जो अमीन के भगड़े लय
 करता है ।

अमील— अमृती जीतरदार साहा ।

आरोगना—भोजन करना ।

अबीला— पानदान ।

अमा— मात्रम ।

अमिरा— दाही मसाम जिसमें मसाम करने वाले को जमीन
 तक गिर भूतापर दोनों हाथ मस्तक पर मगान
 पड़ते हैं ।

अमून— कठिना ।

अमासरा—ये लोग दाही मसाम के नीचे होने से या या
 तो स्यामाविक रीति से दिखते होने से, या अमा
 लिए जाते से । इन्हें मसामों में कहीं भी घान जान का
 रोग-रोग न था ।

अमरबाह—अमर एक नगा होता है । जो अमीन ग बनाना
 जाता है तथा हारे को भाति एक नती के टांग
 दिया जाता है । जो लोग इस नग के पीरोन हात
 हैं अमरबाह बनाने हैं ।

कठिन शब्दों के अर्थ

मन्दाता—घन बेटे वाला । यह वह शब्द है जिसे राजपूताना में राजाघों और भीमानों को सादर संबोधन करने में प्रयोग करते हैं ।

जमीन— एक घाही अथवा जो जमीन के नगड़े सम करता है ।

पमील— अथवा जोहरणार लोहा ।

मारोगमा—भोजन करना ।

दशौसा— गानदान ।

छौसा— भोजन ।

दोर्निश— घाही अथवा जिसमें मसाम करने वाले जो जमीन तथा मिर मुराकर दोर्तो हाथ मसाम पर लगान पड़ते हैं ।

गानून— महिला ।

स्वाशामर—य मोग घाही महमाउ के नीचे होते थे जो या तो स्वानाबिर गीनि में हिन्दू हान थे या बना लिए जाते थे । इन्हें महमा मबही भी मान जाने का शौर-शौर न थी ।

परदूवात्र—परदू एक नगा होता है । जो असीम म बनाया जाता है तथा इसके का भीति एक मरी क द्वारा दिया जाता है । जो मोग हम नन क नीरीन होने है परदूवात्र बनाने है ।

- बाहर— राजपूताने के सख्तारगण अपने को राजा का चाकर
 कहा करते थे जो शिष्टाचार का बाधक है।
- चारण— राजपूताने की एक जाति जो बीररस की कविता
 करते और पूबजों की विरद गा-नाकर राजाओं को
 उत्साहित करते थे। राजा लोग इनका बड़ा धार
 करते थे। राजा उन्हें 'बाबाजी कहकर पुकारते थे।
 छन्देद्वाराही बराम कर्द मुजरा अरब से—यह दार उस समय
 मरीब पुत्राग करते थे जब बाग्राह सत्तामत नहीं
 जान थे। इसका अर्थ यह है।—अरबों के प्रति
 निधि था रहे हैं। अरब ने मुजरा करो।
- तुघ्ने— तुक एक जाति है जो मुसलमानों की है परन्तु
 मुसलमान के गवमाधारण हिन्दू-मुसलमान मात्र के
 मिला तुक या तुकड़ा-शर कोष और अमान की
 भावना ने इस्तेमान करते थे।
- दर्गाह— बाग्राह के ममान।
- शर आगेगिया—दरार पीत्रिय। राजपूतान में गाने-गाने की
 गम्मानमूषर ठंग पर आगना दार बर
 उच्चारण करते हैं।
- पगड़ी-बदल धार—यह मुसल और राजपूतों दोनों जातियों
 पुगनी गति बना धार है कि जब दो म
 पगड़ी बन्ध मने है तो वे ज

भाई-बारे का निर्बाह करते हैं ।

बनाई-आसम—बादशाह का सम्बोधन, सत्कार को उरण देने कास ।

बीनक— अफीम या चंहु के मसे में घादमी भूमता है तो उसे बीनक सेना कहते हैं ।

बाइमी राज—बहिन के लिए यह प्रतिष्ठा का उच्चारण है ।

बेगम खलीसुदीन—रसीसुदीन एक शाही दरवारी उमराव थे जिनकी बावत इतिहासकार मनुषी ने लिखा है कि उनकी बेगम पर बादशाह को ग्रास हुआ थी ।

मठीरु— एक प्रकार का तन्दूर, जो धीकानेर की रेनीमी भूमि पर हाता है । यह बहुत बड़ा होता है । पत्थर का शक बनाकर खाते हैं । पत्थर का पानी पीते हैं । पानी अत्यन्त मीठा और स्यान्ष्ट होता है ।

ममनद— एक बड़ा भारी लकिया जिसके गहारे बड़े भाग घटना प्रतिष्ठा की बात समझते हैं ।

पगो खन्ना अन्नदाना—द्वे अन्न देने वाले धान अत्यन्त शमा पीस है ।

मुजरा— राजपूत जब घपन स्वामी से मिलते हैं तब प्रजाप व स्वान पर मुजरा राज प्रयोग करते हैं ।

मीना बाजार—मुयन बाजार हूँ गान मन्नों में एक बाजार मगाते थे जिसमें घरे पर की बाजगी बह-अन्ति

मूमती घोर घग्गी म गिरखो हूँ । हे प्यारे विरधर ! धसग न
होना तुमस मैं बरोडां भार हा-हा खाती हूँ ।

घरदुन्दु को चाँदनी है तासाब में कमस खिये हूँ । बनीं
म सुन्दर नील कमस फूल हूँ । ये सब विना प्रियतम के खर की
सपन के समान हो रहे हूँ ।

राधा कोठे पर बैठी है धीर बिबाडे खोलकर भाँक रहा
है । एसा माभूम होता है पानो काम खी गढ़ स दोनासी बडूक
छूटी हो ॥१॥

रात बरम रही है पति से जाकर पढ़ दे । तब तऊ हे
गजनी तू राज सखा धीर पोशाक से धरीर को सजा दे ।
दसम तनिक भी दर न कर । प्रीतम को धानि-दुन बरवे ग्रहण
करना चाहिये । उमता धधरामुन धर्य है । खियों को सजाना
ध ध नहीं है । हे रजनो उहे से धा में उमके करण छू खूँ ॥२॥

गुण ४३

मन का गाफ नैशों का सजीना धीर हृदय का गम्भार
मुदु भागी हाप का मर्या पाप मे घडिग वषन का सख्या
रग्य का मर्या हृदय का उदार हाप का डीना धरना हड
रुने बामा मगाटे का मर्या मुग-मुग मरनेबामा ऐसा गुग
ब्रह्मा के धनि पण्डित म बनाया है इमन धपिक धीर श्रु गार
गुग्य का मया है ? ॥४॥

शुभ ८४

घात में तर्क करे अपन मुह भरनो बडाई करे । हर किसी से मिथता का दम्भ भरे । सब कामों से अक्षि प्रकट कर और अपने का बड़ा बनुर समझे, घट्यन्त घामसी हा दूमरे को बुरा कह बड़ुब बबन वामे । जगत्प्रसिद्ध चाणक्य यह राजनीति की निगा दत हैं कि यत्र अमम सबर का बिह्व है । तसे सबक कल्पि राजा का नहीं रखत चाहिय ॥३॥

सानबी हरय

शुभ २

हे महाराज मुउ के तिय जाइय ।

हे मुद क छमा रण म जुभकर घण प्राप्त करा ।

शुभ ३० ३६

हे गानुर अपना घन स, यह राजपूत बेटा है । यह का घरनी में गिर गया पाँच रक्तब में रहू यव धोर घाँवें गूढ गान सग ।

जा गन्ध मरी मुजाता, घत्र, का संरार बन्या है अपनी खा ही को दगता है जगरी घायु कम नहीं ।

मगनीरु हाँवों की घावात्र गुनहर बिगका टेढ़ी मोहें बड़ जाती हैं ह कुमारी य मृमुञ्जय है ।

प्यागों म अश्रम पुना है अमर पुना हूँ है पत्रि क घा वाले हुए, गिर साप मग निपा ।

विना मित्र के बन्धुव ही दम में बड़ता है और फलह करके गिरता है । ऐसे बीरों के नाम को लेकर योधा उसवार बाँपत है ।

गोरु

हिम्मत से कीमत है बिना हिम्मत कीमत नहीं । यों रही बाणज के समान बोई धावर नहीं करता ।

नर नरात्र के समान होते हैं जो जगत् के सिर पर शोभाय मान रहते हैं ।

दकर की छवि मन में छा रही है ।

मिह की गाम जिनका भूपण भीरु हामो की गाल वल है भद्रम तन में लगी है कपामो की मासा गल में है मय्यक में सद्रमा वाभायमान है जैसे बादमा में बिजली । पार्वती के साथ घघरंग वन गगा को मग विव दल सक्ति बटे हैं ।

हे गजपूत कुल मूय घागको जय हो । जिनके प्रयत्न प्रताप वा पृथ्वी सिरी है जिनने प्रयत्न बुजवान से वामु-समा हार गई है जिनने वरगाँ वा यमन म वरती घमफता है के उसवार व धनी गरीर घमरगिण घमर हूए ।

